श्रम व संयम की सौरभ साध्वी कंचनकुमारी 'राजनगर'

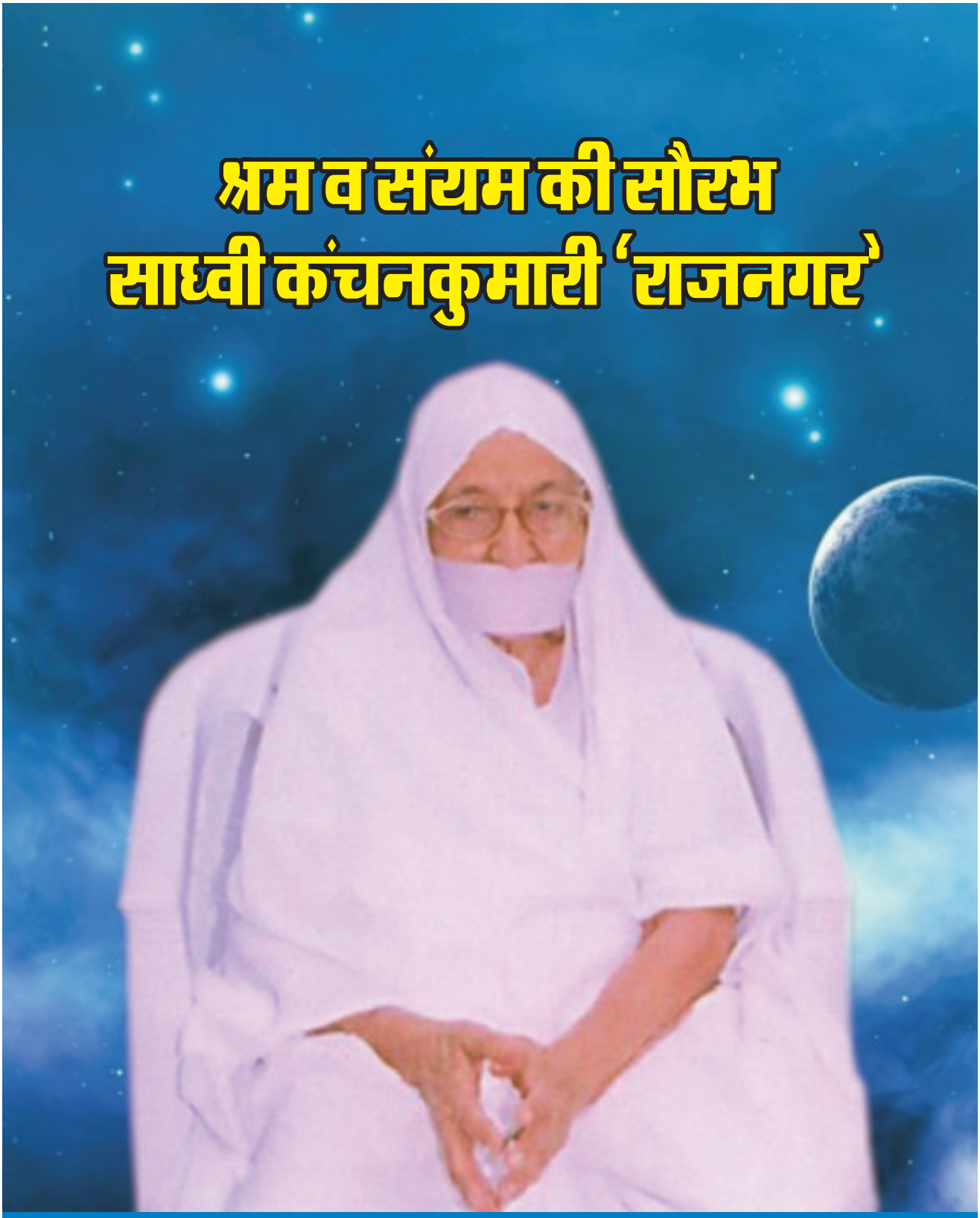

साध्वी विनयश्री 'बोरावड़'
साध्वी पावन प्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रम व संयम की सौरभ
साध्वी कंचनकुमारी 'राजनगर'

साध्वी विनयश्री 'बोरावड़'
साध्वी पावन प्रभा

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशन : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं 341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080/224671
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 40.00 (चालीस रुपया मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर फोन : 0294-2418482

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रम व संयम की सौरभ
साध्वी कंचनकुमारी 'राजनगर'

लेखिका
साध्वी विनयश्री 'बोरावड़'
साध्वी पावन प्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुति

विश्व के रंगमंच पर अनेक व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो युग के कैनवास पर उज्ज्वल छवि अंकित कर देते हैं। निस्पृहता, वत्सलता, उदारता व सेवा भावना आदि व्यक्ति के ऐसे गुण हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अनेकों के दिलों में समा जाता है। ऐसे व्यक्ति के बीत जाने के बाद भी वो हमारे बीच रहता है। कर्मठ व्यक्तित्व की छाप अमिट होती है।

जागतिक परिवेश में मूल्यवत्ता व्यक्ति की नहीं, व्यक्तित्व की होती है। तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वी समाज का इतिहास उल्लेखनीय और आदरणीय रहा है। महान व्यक्तित्व के जीवन–दर्शन को लेखनी का विषय बनाना भावी पीढ़ी को दिशाबोध का हेतु प्रस्तुत करना है। ऐसे ही एक विरल व्यक्तित्व का अभिधान है– साध्वी कंचन कुमारी (राजनगर)।

धर्मनिष्ठ मेवाड़ क्षेत्र के भिक्षु बोधि स्थल– राजसमन्द के पोरवाल परिवार में जन्मी, पूज्य अष्टमाचार्य कालूगणी के कर–कमलों से दीक्षित होकर साध्वी मूलांजी की सन्निधि में अपने संयमी जीवन की ऊर्जा प्राप्त की। ऋजुमना साध्वीश्री कंचनकुमारीजी अपने जीवन में साधना की लौ जलाई, गुरुनिष्ठा, आचारनिष्ठा, संयमनिष्ठा व श्रमनिष्ठा से जीवन को सजा कर सबके सामने आदर्श प्रस्तुत कर दिया। **''निज्जरट्ठिए''** का भाव उनके कण–कण में रमा हुआ था। वे कहा करते कि साधु अपनी प्रवृत्ति बिना किसी आकांक्षा से करता है, तभी वह महानिर्जरा धर्म की आराधना करता है। वे धुन की धनी थी। किसी ने ठीक ही कहा है–

''धुन के पक्के कर्मठ मानव जिस पथ पर बढ़ जाते है,
एक बार तो धरती को भी स्वर्ग बना दिखलाते हैं।

साध्वीश्री की जीवनशैली का एक विशेष गुण था– लगन और धुन से कार्य का सम्पादन करना। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के बाद उसे पूरा करके ही विश्राम लेते। इन गुणों के साथ–साथ सरलता, सजगता, मृदुता आदि अनेक गुण उनमें समाहित थे। आधि–व्याधि से मुक्त सदा समाधिस्थ व स्वावलंबी रहने वाली साध्वीश्रीजी ध्रुव योगों में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बड़ी जागरूक रहती थी। प्रतिक्रमण व प्रतिलेखना जागरूकता एवं शुद्ध उच्चारणपूर्वक करना उनके जीवन का क्रम था।

इस जीवन यात्रा से अलविदा लेते समय में भी वे प्रतिक्रमण में लीन थी। एक बार आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने ईड़वा में वर्गीय पृच्छा के समय उनके लिए फरमाया– इनके अनुभव लिखो और इनके जीवन से प्रेरणा लो। इस उम्र में भी इतनी कर्मठता एवं सक्रियता से कार्य करती हैं।

गुरुदेव श्री तुलसी ने उनकी योग्यता को देखकर वि.सं. 2002 में उनको अग्रगण्य बनाया। साध्वीश्री प्रथम चातुर्मास भीलवाड़ा करके वे गुरु सन्निधि में पहुंची। माघ शुक्ला पंचमी को नई साध्वी के रूप में साध्वी विनयश्री 'बोरावड़' को साध्वीश्री कंचनकुमारीजी की वन्दना करवाई। नवदीक्षित साध्वी को पाकर उनके मन में भी अत्यधिक प्रसन्नता हुई। अपने कुशल नेतृत्व से नई साध्वी को तैयार करना उनकी दक्षता का प्रमाण था। इसी तरह वि. सं. 2037 में नवदीक्षित साध्वी पावनप्रभा को भी पूज्य गणाधिपति ने उनकी सहयोगी साध्वी के रूप में वन्दना करवाई। हम दोनों साध्वियों ने अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त किया, पूज्यवरों का आशीर्वाद तो प्रमुख रहा ही, साथ ही साध्वीश्रीजी की वत्सलता एवं कर्मठता ने हमें भी पग–पग पर नई चेतना दी। उनके वात्सल्यमय व्यवहार को हम अपने जीवन में कभी भी विस्मृत नहीं कर पाएंगे। हमारी अस्वस्थता हो जाती तो घण्टों–घण्टों तक स्वाध्याय करवा कर चित्त समाधि में सहयोग करती। उनकी विरल विशेषताओं को हम शब्दों में बांधने में असमर्थ हैं। उन्होंने अपने अन्तिम समय में हमें जो शिक्षाएं फरमाई, वो हमारे जीवन में वरदान स्वरूप सदा साथ रहेंगी :–

1. आचार–विचार में पूर्ण जागरूक रहना।
2. संघ व संघपति के प्रति अटूट आस्था रखना।
3. संघ की सदैव प्रभावना बढ़ाती रहना।
4. सभी साध्वियां आपस में सामंजस्य से रहना व सभी का आपस में पूरा ध्यान रखना।

इन शिक्षाओं को हम सदैव आत्मसात करती रहें, यही मनोभावना

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

है। आज वो हमारे बीच प्रत्यक्ष नहीं है, पर जहां भी वह भव्य आत्मा हैं, वही से हमारी ज्ञान–दर्शन–चारित्र की आराधना में सहयोगी बनी रहे, यही हार्दिक कामना है।

''कितना क्या है, कहा न जाता, जितना है, वो लिखा न जाता
सविनय पावन यही निवेदन, संयम हरदम रहे निखरता।।''

श्रद्धासिक्त भावों से स्मृति करते हैं गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की, जिन्होंने साध्वीश्री कंचनकुमारीजी साथ हमारे भाग्य को संवारा।

हम श्रद्वाप्रणत हैं तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति, जिन्होंने करुणा बरसा कर साध्वी कंचन कुमारीजी को समय–समय पर विशेष संदेश व अंत समय में भी संदेश प्रदान किया।

हम श्रद्धानत हैं परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति, महती अनुकम्पा करवाते हुए पूज्यवर ने साध्वीश्री की जीवनी को प्रस्तुत करने की अनुज्ञा करवाई, मंगल संदेश से कृतार्थ किया।

हम कृतज्ञ हैं वात्सल्यमयी मातृहृदया संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति, साध्वी कंचन कुमारीजी को अपने दीर्घ जीवन के संयम पर्याय में कई बार मातृ हृदया ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान किया और उन्हें प्रोत्साहित किया।

प्रस्तुत पुस्तक को सुव्यवस्थित लिखने में, परिवर्तन व परिवर्धन करने में साध्वी मननयशाजी व समणी सत्यप्रज्ञाजी ने आत्मीय भावना के साथ श्रम व सहयोग किया। इनके श्रम को विस्मृत नहीं किया जा सकता। इसकी प्रतिलिपी करने में साध्वी आत्मयशाजी का श्रम लगा। इन सभी के प्रति कृतज्ञता।

पुस्तक–प्रकाशन का दायित्व श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री पारसजी सुराणा एवं श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती कलकत्ती देवी सुराणा, श्री अशोक जी सुराणा, ईड़वा–बैंगलोर ने निभाया।

हमें आत्मतोष है कि हम अपनी प्रेरणास्रोत अग्रगण्य साध्वीश्री के जीवन की झांकी के प्रस्तुतीकरण को सुधि पाठकों के हाथों में दे रही हैं। उनका जीवन दर्पण सभी को प्रेरणा पाथेय प्रदान करता रहें, इसी आशा के साथ–

साध्वी विनयश्री 'बोरवड़'
साध्वश्री पावनप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रम व संयम की सौरभ
साध्वी कंचनकुमारी 'राजनगर'

शक्ति एवं भक्ति की संगम मेवाड़ की धरा में राजनगर आचार्य भिक्षु का बोधिस्थल है। यही मेवाड़ की धरा तेरापंथ धर्मसंघ की जन्म स्थली रही। इसी मेवाड़ के राजनगर का पोरवाल परिवार आचार्य भिक्षु की परम्परा से लेकर वर्तमान तक श्रद्धालु एवं शासन भक्त है। आचार्य तुलसी के युग में सोहनलाल जी पोरवाल एक प्रतिष्ठित एवं संघनिष्ठ श्रावक हुए। वे संघ व संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित थे। बाद में वे उदयपुर प्रवासी हो गए। कपड़े के व्यवसाय में उनकी प्रामाणिकता एवं बौद्धिक चातुर्य सफलता के सोपान बने। उदयपुर में तेरापंथ–भवन नहीं था। भवन निर्माण में इनका प्रयास सफल रहा। इस सफलता की सराहना करते हुए आचार्य तुलसी ने फरमाया–''सोहनलाल! तुम्हारे सामने कितनी बाधाएं आई, समस्याएं आईं, फिर भी तुम घबराए नहीं और अपने लक्ष्य में सफल हो गए।'' पूरा पोरवाल परिवार आज भी संघ–संघपति के प्रति आस्थावान है, धार्मिक संस्कारों से ओत–प्रोत है, साधु–संतों की सेवा में समर्पित है।

इसी पोरवाल परिवार में सोहनलाल के चचेरे– भाई श्रावक मगनलालजी पोरवाल हुए। उनके तीन पुत्रियां हुई 1. संतोष 2. मोहन 3. कचंन। दो पुत्रियां उदयपुर के क्रमशः खेमावत परिवार एवं कोठारी परिवार में ब्याह दी गई। मनोहरलालजी खेमावत के सुपुत्र श्री नानालाल जी खेमावत एक श्रद्धालु व सेवाभावी श्रावक थे। उदयपुर में साधु–साध्वियों की निरन्तर सेवा करते थे। गोचरी की सेवा करने के पश्चात् ही अपने व्यवसाय पर जाते थे। संतोष बाई की पुत्री जतनदेवी श्री फतेहचन्द जी पोरवाल (उदयपुर) को ब्याही गई। उनके सुपुत्र डॉ. हेमन्त पोरवाल एवं डॉ. विनोद पोरवाल चिकित्सा के क्षेत्र में वर्तमान में साधु–साध्वियों की अच्छी सेवा कर रहे हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने 25 दिसम्बर 2008 को सुजानगढ़ में दोनों भाइयों की सेवा का उल्लेख करते हुए दोनों को कल्याणमित्र के सम्बोधन से सम्बोधित किया। ये कंचनकुमारीजी के संसारपक्षीय भानजी के सुपुत्र हैं। दोनों बहिनों के परिवार ने साध्वी कंचनकुमारीजी की सेवा कर अपने दायित्व का निर्वहन किया। साध्वीश्री के भाई नहीं था। बहिनों ने पूर्ण दायित्व निभाया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जन्म

जन्म लेना भी एक नियति है। आत्मा अपने पूर्व शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। अपने पूर्वार्जित संस्कारों के साथ नए परिवेश में प्रवेश करती है। उस समय न कोई लक्ष्य होता है, न कोई चिन्तन। बस केवल जन्म लेता है। जन्म के समय धरती ही उसका बिछौना होती है और आकाश छत होती है। जब गर्भस्थ शिशु खुले वातावरण में आता है तब नई श्वास के साथ नई ऊर्जा प्राप्त करता है और वर्धमानता को प्राप्त करता है। बचपन, यौवन एवं वृद्धावस्था की परिक्रमा करते हुए अपनी जीवन यात्रा पूरी करता है। इसी जन्म की परम्परा को वहन करते हुए वि.स. 1971 पौष कृष्णा द्वादशी को मातुश्री घुमर देवी की कुक्षि से पुत्री कंचन ने जन्म लिया। पिता श्री मगनलाल जी के पहिले से ही दो पुत्रियां थी, पुत्र की आशा थी, पर संयोग से बेटे की जगह तीसरी बेटी ने ही गोद भरी। सक्षम पिता ने बेटी को लक्ष्मी को रूप मानकर परिवार में कन्या जन्म पर खुशियां मनाई। भारतीय परम्परा में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा– ये तीन महाशक्तियां मानी जाती हैं। अर्थसंपन्नता, ज्ञानसंपन्नता और शक्तिसंपन्नता की प्रतीक इन तीनों का योग मिलने पर भाग्य का सितारा चमक जाता है। लगता है मगनलाल जी को भी भाग्य ने साथ दिया। तीनों शक्तियों के रूप में माता–पिता ने तीनों कन्याओं को प्राप्त किया। सबसे छोटी पुत्री का नाम दिया– ''कंचन''। माता–पिता के अनहद प्यार–दुलार में बालिका कंचन की किलकारियों की मीठी गूंज से गृहांगन की रौनक शतगुणी हो गई। कंचन की कोमलता और बालसुलभता को देखकर परिजन भाव विभोर हो जाते। संसार का प्रत्येक प्राणी काल, स्वभाव , कर्म, पुरुषार्थ एवं नियति से सम्पोषित होकर चलता है। नियति के इसी नियम के आधार पर बालिका कंचन विकासशील रही।

बाल्यकाल

शिशुवय निश्छलता, निश्चिंतता एवं मस्ती की अवस्था होती है। बालिका कंचन अपनी मां के स्नेहिल आचंल की छाया में सुखद वातावरण में प्रमुदित थी। मां के हृदय में अथाह ममत्व भाव होता है। मां को जानने वाला ही महात्मा को जान सकता है और मां को जानने वाला ही परमात्मा को पहचान सकता है। महात्मा एवं परमात्मा वही बन सकता है जो मां को पहचानता है। किसी ने ठीक ही कहा है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

''मां के बिना सूना लगता हैं– घर–आंगन।
सुन्दर फूलों के बिना कब खिलता है उपवन।
प्यारा–प्यारा मेरी मां का साया,
सघन ताप में भी करती है छाया।
मां को जो प्यार करे, वो लोग निराले होते हैं,
जिसे मां का आशीर्वाद मिले वो किस्मत वाले होते है।''
''मां तो वो होती है जो मन की गति को पहचान लेती है,
हर गम हमसे पहले वो जान लेती है।

मां का वियोग–

काल की गति, कर्म का विपाक, संसार का विचित्र चित्र। नियति की क्रूर दृष्टि पड़ी कि जन्म के मात्र ढाई वर्षों बाद ही उस नन्हीं बालिका पर वज्रपात हुआ। अचानक मां का साया सिर से उठ गया। मृत्यु का निमित्त कारण बना प्रकृति का प्रकोप। पूरा राजस्थान महामारी के प्रकोप से आक्रान्त हो गया। उस प्रकोप ने सैकड़ों–सैकड़ों लोगों को मृत्यु की गोद में सुला दिया। बालिका कंचन की मातुश्री प्रकृति के उस प्रकोप की चपेट में आ गई और बिलखते परिवार को छोड़ कर संसार से विदा हो गई। माता घूमर देवी का वियोग परिवार के लिए आर्त्तध्यान का निमित्त बन गया। बच्चों के पालन–पोषण में मां ही एक सहारा होती है। मां ही जन्म दात्री एवं जीवन दात्री होती है। मां के बिना बच्चों का संसार सूना हो जाता है। मां के स्नेहाभाव से बालक विक्षिप्त सा हो जाता है। मनोविज्ञान भी इस बात को सिद्ध कर रहा है कि मां के बिना बालक का मानसिक विकास कुंठित हो जाता है। बच्चा प्रसन्न व पुलकित नहीं रह सकता है। बच्चे के लिए मां ही सब कुछ होती है।

संस्कारों की सौरभ

मां का साया उठ जाने के बाद पिता पर दोहरा दायित्व आ जाता है। पिता मगनलाल जी के साथ भी ऐसा ही घटित हुआ। तीनों बेटियां छोटी थी, उनको संभालना बहुत कठिन काम था। मगनलालजी ने उस विषम परिस्थिति में धैर्य और हिम्मत का परिचय दिया। बच्चों को वात्सल्य एवं प्यार देकर मां की भूमिका भी निभाई। देव–गुरू–धर्म के प्रति गहरी आस्था व श्रद्धा होने से आर्त्तध्यान–धर्मध्यान में बदल गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विचारों में शक्ति का संचार हुआ, मनोयोग से अपने व्यापार के संचालन के साथ–साथ परिवार का पालन–पोषण भी अच्छी तरह से करने लगे। पिताश्री के सुदृढ़ हाथों से तीनों बालिकाओं का लालन–पालन सुचारू रूप से हो रहा था। पिताश्री साधारण किराणा की दुकान किया करते थे। दुकान की ऊपरी मंजिल पर साधु–साध्वियों का विराजना होता था। प्रासुक–एषणीय वस्तुओं के पात्र दान की भावना उनमें प्रबल रहती थी। सामीप्य के कारण सुपात्रदान का अवसर सहज ही उनको प्राप्त हो जाता। परिवार में धार्मिक संस्कार होने से बच्चों में भी धार्मिक संस्कार आना स्वाभाविक है।

बचपन मस्ती का समय होता है। अठखेलियां करता हुआ बचपन कभी नाचता है तो कभी कूदता है। यह अवस्था सहज, सरल व स्वाभाविक होती है। छलकपट व वंचना से रहित बालक सबको प्रिय होता है।

''किं बाललीला–कलितो न बालः
पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः।।

बालभाव की लीला से युक्त बालक माता–पिता से आगे निर्विकल्प होकर क्या नहीं बोलता है! कुछ भी बोल सकता है।

बालक एक मिट्टी का ढेला होता है। कुशल कलाकार– कुम्भकार के हाथों सृजन पाकर सुन्दर कलश का आकार ले लेता है। बचपन एक कोरे कागज के समान है। कौशल की तूलिका चाहे जैसा रंग उसमें उकेर देती है। बालिका कंचन को भी सहज में साधु–साध्वियों का सान्निध्य प्राप्त होता रहा। एक बार साध्वी सोहनांजी (राजनगर) का चातुर्मास राजनगर में ही था। वे उनकी संसार पक्षीय चचेरी बहिन थी। साध्वीश्री वृद्धांजी चाची थी। ये दोनों मां–बेटी साथ में ही थी। साध्वी सोहनाजी अपने युग की विदुषी एवं शास्त्रों की मर्मज्ञ साध्वी थी। उनकी विशेष अनुकम्पा से बालिका कंचन को तत्त्वज्ञान सीखने का मौका प्राप्त हो गया। संयम, तप व त्याग की प्रतिमूर्ति साध्वियों के उपदेशामृत से उनके अन्तर्मानस में वैराग्य–दीप प्रज्ज्वलित होने लगा। भीतर में जन्म–जन्मातंर के संस्कार जागृत हुए और सहज ही वैराग्य भावों की स्फुरणा हो गई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संसार से विरक्ति

''अज्ञ मनुज के लिए जगत में जो बन्धन के हेतु।
बन जाते है सुज्ञजनों के वे ही पार पहुंचने सेतु।।''

इस विराट् विश्व में अनेकानेक मजहब, सम्प्रदाय व पंथ प्रचलित हैं। सब की अपनी–अपनी मान्यताएं हैं। उन सबमें एक व्यापक सिद्धान्त है– त्यागवृत्ति। सभी धर्म इस बात को स्वीकार करते हैं। संसार के सभी धर्मों में मुमुक्षा भाव को स्वीकार किया है और जीवन के उच्च स्तर को पाने, विकास के लिए इसे आवश्यक माना है। संन्यासवृत्ति से जीवन शान्तिमय, सुखमय व संतोषमय बन जाता है। जैन सिद्धान्त में संन्यास को विशेष महत्त्व दिया गया है। मोहनीय कर्म के क्षयोपक्षम के बिना त्यागवृत्ति, वैराग्य या अनासक्त भावना प्राप्त नहीं की जा सकती। चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपक्षम से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। संसार से विरति होती है और व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति सचेतन हो जाता है। संसार से पराङ्मुखता का नाम वैराग्य या विरक्ति है।

वैराग्य दो प्रकार का होता है– (1) निसर्गज (2) अधिगमज। निसर्गज या नैसर्गिक वैराग्य क्षयोपक्षम जनित एवं पूर्वगत संस्कार जनित होता है। कुछ व्यक्तियों को विरक्ति निमित्त से होती है। उपदान कारण भीतर में होता है और निमित्त मिलते ही वह उभर जाता है। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं। भगवान अरिष्टनेमि ने पशुओं के करूण चित्कार को सुना और उन्हें वैराग्य हो गया। भगवान पार्श्वनाथ को पंचाग्नि तप में जलते हुए युगल नाग को देख कर वैराग्य हो गया। मृगापुत्र ने एक साधु को देखा, सम्राट भरत ने श्रृंगार रहित अंगुली को देखा, गौतम बुद्ध ने वृद्ध व्यक्ति को देखा, हनुमानजी ने डूबते हुए सूर्य को देखा और संसार से विरक्ति हो गई। बालिका कंचन को भी जीवन की क्षणिकता के दर्शन का निमित्त मिला और वैराग्य हो गया। मृत्यु को देखकर कर उनके बाल हृदय पर गहरी चोट लगी। भीतर हलचल मची। संज्ञान हुआ कि सचमुच इस नश्वर संसार में कोई किसी का नहीं है। एक दिन सभी को जाना है। यह घटनाक्रम वैराग्य का निमित्त बन गया और संसार की नश्वरता ने उन्हें जगा दिया। साधुत्व स्वीकार करने के लिए अटल साहस और उसे आजीवन निभाने के लिए मजबूत संकल्प अनिवार्य होता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संकल्पी सूर्य कई सांसारिक कार्य शारीरिक बल, बुद्धिबल, मनोबल से होते हैं पर साधुत्व के लिए उपरोक्त तीनों बल विशेष रूप से जरूरी है। बालिका कंचन के भीतर भी तीन बल जागृत हुए। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है

"जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करं मन्दरो गिरी।
तहा निहुयं नीसंकं, दुक्करं समणत्तणं।। (19.41)

अर्थात् जिस प्रकार सुमेरू पर्वत को तराजू से तोलना दुष्कर है, उसी प्रकार निश्चल और शंका रहित साधुता का पालन दुःशक्य है। वीर पुरुष ही इस महा पथ को अपना सकता है। बालिका कंचन वीरपथ का अनुगमन करने के लिए तैयार हो गई। चारित्र प्राप्त करने की उनकी भावना पुष्ट हो गई। उनके पिताश्री को जब यह जानकारी मिली कि पुत्री कंचन साधुत्व स्वीकार करने के लिए तैयार हो रही है। सबसे छोटी व लाडली पुत्री होने के कारण पिताश्री का स्नेह भाव एवं मोह अधिक था। अतः वे नहीं चाहते थे कि यह सुकोमल कन्या साधुत्व का कंटीला मार्ग स्वीकार करे। इस दुष्कर मार्ग पर चलना उनको हृदयंगम नहीं हुआ। मातृ–स्नेह से वंचित बालिका कंचन को पूरे परिवार का अनहद वात्सल्य मिल रहा था।

एक बार राजनगर की श्राविका, श्रीमती भंवरलाल जी एडवोकेट एवं अणुव्रत सेवी कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री देवेन्द्र कुमार जी कर्णावट की माताजी भभूती बाई अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के दर्शनार्थ थली प्रदेश जा रही थी। गुरु दर्शन करने के लिए वे भी उनके साथ जाने तैयार हो गई। भभूती बाई एवं घूमर बाई दोनों आपस में मुंहबोली बहनें थी। बालिका कंचन उनको मौसी कहकर ही पुकारती थी। गुरुदर्शन के लिए मौसी के साथ तैयार होकर जाने के लिए बैलगाड़ी पर सवार हो गई। पिता श्री को पता लगते ही तत्काल बैलगाड़ी पर सवार कंचन को नीचे उतार कर घर ले गये। आवेश में आ कर जोर से बोलते हुए कहा– तुम्हें कहीं नहीं जाना है, यदि कहीं जाने का नाम भी लिया तो ताले में बंद कर दूंगा। इतनी डांट पाने के बाद भी आप अपने संकल्प से विचलित नहीं हुई, अपना आग्रह नहीं छोड़ा और अपने संकल्प को ज्यादा मजबूत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कर लिया। ऐसा संकल्प कर लिया कि जब तक मुझे दीक्षा की अनुमति नहीं मिलेगी तब तक खाना–पीना नहीं करूंगी। इस तरह अपने फौलादी संकल्प पर अडिग रही। पिताश्री को यह बात मान्य नहीं थी और उन्हें ताले में बंद कर दिया। कई घंटों तक भूख–प्यास के परिषह को सहन करती रही। आखिर कंचन के दृढ़ संकल्प–सूर्य ने सभी को द्रवित कर दिया। इससे प्रभावित होकर पिताश्री ने स्वयं ताला खोल कर बंधन से मुक्त कर दिया। कंचन तो संसार रूपी बंधन से मुक्त होना चाहती थी। जिस व्यक्ति का संकल्प मजबूत होता है, वह अपने जीवन में उत्तरोतर विकास करता है और उनके आगे का मार्ग स्वयं प्रशस्त हो जाता है। पिताश्री की अनुमति मिलते ही बालिका कचंन अपनी भावना को लेकर गुरु चरणों में पहुंची। गुरुदर्शन के बाद श्रीचरणों में अपनी भावना निवेदित की–''गुरुदेव म्हारी दीक्षा री भावना है। मैं साधु बणनों चाहूं हूँ। कृपा कर म्हारी भावना ने पूरी कराओ। म्हारो वैराग्य पक्को है। परिवार वाला री म्हनें आज्ञा मिल गई है। गुरुदेव! जल्दी कृपा कराओ। म्हनें जल्दी सुं जल्दी दीक्षा दिरवाओ।'' उस समय गुरुदेव के पास मंत्रीमुनि मगनलाल जी स्वामी विराज रहे थे। मंत्री मुनि एवं मगनलाल जी पोरवाल आपस में मामा–बुआ के भाई थे। जैसे ही कंचन ने गुरुदेव के समक्ष अपनी भावना रखी, उसी समय मंत्रीमुनि ने तुरन्त उनकी सिफारिश की ओर निवेदन किया कि ''गुरुदेव आ छोटी–सी बच्ची आप रै चरणां में दीक्षा री अर्ज करे है। अन्नदाता आप कृपा करवाओ, इन्है दीक्षा रो आदेश फरमाओ''। करूणा के प्रतिमूर्ति पूज्य कालूगणी ने छोटी सी बालिका की भावना पर ध्यान दिया एवं दीक्षा की स्वीकृति प्रदान कर दी। दीक्षा की अनुमति प्राप्त करते ही मुमुक्ष कचंन खुशियों से झूम उठी।

संन्यास की ओर–

वि. सं. 1986 माघ शुक्ला दशमी को सुजानगढ़ में (सिंघी जी के नोहरे में) विशाल जनमेदिनी के मध्य परिजनों से आज्ञा प्राप्त कर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी पन्द्रह वर्षीय किशोरी को दीक्षा का प्रत्याख्यान करवा रहे थे। 'करेमि भन्ते सामाइयं..... ' आगम सूक्तों का

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उच्चारण करवा रहे थे। उसी समय मुमुक्षु कंचन के पिता श्री मगनलाल जी बीच में ही खड़े हुए। मोहाकुल स्थिति में पुत्री कंचन के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए गद्‌गद स्वर में बोले– ''बेटी! राजी खुशी रहीजै, ध्यान राखजै।'' इस स्थिति को देख कर पूज्य प्रवर ने तत्काल फरमाया– मगन लाल जी! कंचन अब साध्वी बन गई है। अब इनका संघट्‌टा मत करो, यह अब हमारी हो गई है। यह कुमारी कंचन नहीं रही है। अब यह साध्वी कचंन कुमारी बन गई है। उसी समय पिताश्री मगनलाल जी ने बादाम आदि मेवा आचार्य प्रवर की पछेवड़ी में बहरा दी। मंत्री मुनि बोले ''अरै भाई कांई करै हैं''। पिता मगनलाल जी बोले–'कांई–कांई करूं हूं, मोटा–पुरुषां गुरुदेव री गोद भरूं हूं।' वहां उपस्थित श्रावक समाज रोमाचिंत हो कर मुस्कराने लगा। वातावरण हास्यमय बन गया। पूज्य प्रवर का आशीर्वचन प्राप्त हुआ। वैरागिन कंचन साध्वी कचंन बन गई। पूज्य प्रवर ने शिक्षा फरमाई–'अब से तुम्हारी हर क्रिया जागरूकता व विवेकपूर्ण होगी।' भगवान महावीर की वाणी नवदीक्षित साधु को यह प्रेरणा देती है–

''कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई।।''

कैसे चलना है, कैसे खड़े होना है, कैसे बैठना है, कैसा सोना है, कैसे खाना है और कैसे बोलना है, जिससे पापकर्म का बंधन न हो?समाधान भी दिया गया–

''जय चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई।।''

यत्नापूर्वक चलना, खड़ा होना, बैठना, सोना, खाना और यत्नापूर्वक बोलने वाला पापकर्म का बंधन नहीं करता है। बाइसवें तीर्थकर कुमार अरिष्टनेमी जब प्रवर्जित हो रहे थे, उस समय उनके चचेरे भाई वासुदेव श्री कृष्ण ने आर्शीवाद प्रदान करते हुए कहा–

''नाणेणं दसंणेणं च चरित्तेणं तहेव य।
खंतीए मुत्तीए, वड्‌ढमाणो भवाहि य।।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुम ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षांति और मुक्ति से बढ़ो। नवदीक्षित साध्वी कंचनकुमारी को भी यह आशीर्वाद मिला और संयम वर्धमान होता गया।

तेरापंथ की अनूठी दीक्षा–

दीक्षा का अभिप्राय है– वीतराग पथ पर अपने आपको समर्पित कर देना। मुमुक्षा भाव से ओतः प्रोत व्यक्ति ही संयम पथ स्वीकार कर सकता है। तेरापंथ धर्म संघ की दीक्षा एक विलक्षण दीक्षा है। इस धर्मसंघ में दीक्षित होना कोई सरल काम नहीं है। यहां शिक्षा, परीक्षा और समीक्षा के बाद ही दीक्षा होती है। यहां दीक्षित होने वाला हर व्यक्ति निश्चिंतता का जीवन जीता है। अपना सर्वस्व गुरुचरणों में समर्पित कर निर्भार हो जाता है। एक गुरु के अनुशासन–मर्यादा में रहते हुए अपने जीवन का विकास करते हुए लक्षित मंजिल को प्राप्त कर लेता है। आचार्य भिक्षु ने इस धर्मसंघ में आज्ञा, मर्यादा, संगठन, विनय और समर्पण की स्रोतस्विनी बहायी। साधु–साध्वी आज्ञा को सर्वोपरि मानकर संयम–यात्रा को गतिशील बनाते है।

साध्वी कचंन कुमारी एक विराट् एवं विलक्षण धर्मसंघ की तेरापंथ संघ की साध्वी बनी। साध्वी प्रमुखा कानकुमारी जी के करकमलों से उनका केश लुंचन हुआ। परमाराध्य गुरुदेव ने ओज आहार के रूप में प्रथम ग्रास देने के साथ फरमाया ''तुम्हें एक आदर्श साध्वी बनना है। तुम अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करते हुए आगे से आगे गतिशील बनो। यही मंगल कामना है।''

नवदीक्षिता साध्वी कंचन कुमारी को सतिशेखरे साध्वीप्रमुखाश्री जी की निकट उपासना का सुनहरा अवसर मिला। संयम साधना में गतिशील बनने के लिए प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ। नवदीक्षिता को नया सिंचन और संस्कारों का पोषण मिलने लगा। लगभग एक वर्ष तक गुरुकुल वास की सौरभ प्राप्त हुई। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की त्रिवेणी में अपने आपको अभिस्नात किया। आगम ज्ञान को कंठस्थ करने लगी। दसवेआलियं सूत्र जल्दी ही कण्ठस्थ कर लिया। पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित साध्वी कंचन कुमारी को अग्रगण्य साध्वी मूलांजी (दिवेर) को वंदना करवाई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचारनिष्ठ साध्वीश्री मूलांजी–

साध्वीश्री मूलांजी आमेट के बोहरा परिवार की बेटी एवं संघ के प्रति समर्पित व प्रतिष्ठित श्रावक किशनलालजी एवं कजोड़ीमलजी की बहिन थी। वे दिवेर महता परिवार में ब्याही गई थी। बाल्यावस्था में ही पति वियोग के दुःखद दृश्य ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। संसार की नश्वरता और क्षणभंगुरता को जानकर गृहस्थ अवस्था में संयमी जीवन प्रारंभ कर दिया। साध्वी मूलांजी करूणामूर्ति पूज्य कालूगणी के कर–कमलों से दीक्षित हुई। वे बड़ी हिम्मतवर व साहसिक साध्वी थी। आचार–विचार में बड़ी जागरूक थी। उनकी गुरु भक्ति बेजोड़ थी। गृरुदृष्टि ही उनकी सृष्टि थी। गुरु आज्ञा को प्राणों से भी बढ़कर बहुमान देती थी। वि. सं. 2002 को उनका चातुर्मास भगवतगढ़ फरमाया। विहार करते हुए वे बोरावड़ पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्हें टायफाईड हो गया, खून की दस्तें लगने लगी। शारीरिक कमजोरी की स्थिति बन गई पर मनोबल मजबूत रहा। उनके मन में समर्पण की यही भावना रही कि गुरुदेव ने मुझे जहां जाने का आदेश दिया है, मैं वहां सकुशल पहुंच जाऊं। बोरावड़ से विहार कर धीरे–धीरे अपने गंतव्य स्थल तक पहुंचने की कोशिश कर रही थी किन्तु शारीरिक दुर्बलता के कारण वहां तक नहीं पहुंच सकी। अतः उनको जोबनेर ही चातुर्मास करना पड़ा। चातुर्मास के दौरान उनकी अस्वस्थता बढ़ती गई। भाद्रव शुक्ला द्वितीया को दो घंटों के अनशन में उन्होंने समाधि मरण को वरण कर लिया। लगभग 16 वर्षों तक अग्रगण्य साध्वी श्री मूलांजी का आत्मीय भाव व वात्सल्य भाव साध्वी कंचन कुमारी जी को मिला। उनके सान्निध्य में रहकर साध्वी कंचनकुमारीजी ने अपने जीवन का निर्माण किया। विनम्र तथा अनुकूल सहयोगिनी साध्वी के रूप में काम किया। उनकी चित्त समाधि में योगभूत बनी। उनके स्वर्गवास के पश्चात् गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने आगामी चुरू मर्यादा महोत्सव पर उनकी योग्यता का अंकन करते हुए अग्रगण्य का दायित्व सौंपा।

तारयाणं के पथ पर–

आर्हत् वाङ्मय का एक सूत्र है–

''विहारचरिया इसिणं पसत्था''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधु की प्रशस्त विहारचर्या होती है। साधु स्वयं अपनी साधना करते हुए दूसरों को सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रेरित करते हैं। स्वकल्याण एवं परकल्याण के लिए विचरण करते हैं। प्रशस्त विहारचर्या के सूक्त को हृदयंगम कर अपनी जिम्मेदारी की यात्रा साध्वीश्री ने प्रारम्भ कर दी।

प्रथम चातुर्मास वस्त्रनगरी भीलवाड़ा में–

साध्वी कंचनकुमारी जी को अग्रगण्य बनाते ही गुरुदेवश्री तुलसी ने वि. सं. 2003 का चातुर्मास भीलवाड़ा फरमाया। साध्वी ज्ञानांजी (पड़िहारा), साध्वी सोहनांजी (बोरावड़) साध्वी सोहनाजी (चाड़वास) उनके साथ थी। नए उत्साह, जोश और नई उमंग से भीलवाड़ा की प्रबुद्ध जनता में उन्होंने जागृति का दीप जलाया। विशेष प्रयत्न कर अनेकों लोगों को गुरूधारणा करवाई। अनेक गतिविधियों के साथ तत्त्वज्ञान, थोकड़े, प्रतिक्रमण आदि कण्ठस्थ करवाए। इस प्रकार भीलवाड़ा का प्रथम चातुर्मास सफल रहा।

तेरापंथ धर्मसंध में हस्तकला की शुरू से ही प्रमुखता रही है। साधु–साध्वियां अपने हाथों से अनेक उपकरणों का निर्माण करते हैं। जब भी साधु–साध्वियां गुरु सन्निधि में पहुंचते है तो खाली हाथ नहीं जाते। कुछ न कुछ भेंट अवश्य लेकर दर्शन करते हैं। भीलवाड़ा चातुर्मास में अपनी सहयोगी साध्वियों के सहयोग से चालीस नारियल की टोपसियां व दस पुस्तकों की पट्टियों का निर्माण किया। टोपसियों की कांट–छांट और सुंदर आकार देने में उनके हाथों में अच्छी कला थी। संघ में काम आए, वैसी भेंट तैयार करना ही समय की उपयोगिता है, यह उनके दिमाग में स्पष्ट रहा। गुरु सन्निधि में उपहार स्वरूप भेंट करने की भावना को मूर्त्त रूप देते हुए उपरोक्त उपकरण उन्होंने गुरुदेव को प्रथम भेंट दिए।

इसी चातुर्मास में बोरावड़ से मासूम बालिका गणपति अपनी संसारपक्षीय बहनों– साध्वी ज्ञानांजी एवं साध्वी सोहनांजी की दर्शन सेवा में वहां उपस्थित हुई। गणपति कद में छोटी तथा मासूम लगती थी। वैराग्य भावना की प्रेरणा से साधुत्व ग्रहण करने को तैयार वैरागी गणपति भीलवाड़ा पहुंची। इस छोटी सी मासूम बालिका को वैरागी के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रूप में देखकर भीलवाड़ा के श्रावक समाज में खुशी का माहौल बन गया। बड़े उत्साह के साथ वहां शोभायात्रा निकली। साध्वी कंचनकुमारी जी के सानिध्य में मंगल भावना समारोह का कार्यक्रम रहा। धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना रही।

आस्था का चमत्कार–

साध्वी कंचनकुमारी जी का वि.स. 2004 का चातुर्मास तेरापंथ की जन्म स्थली केलवा में था। सर्वविदित है कि तेरापंथ के संस्थापक पूज्य आचार्य श्री भिक्षु का प्रथम चातुर्मास केलवा की ''अंधेरी ओरी'' में हुआ था। वहां भगवान चन्द्रप्रभु का प्राचीन मंदिर है। वहां के अधिष्ठायक देव यक्षराज हैं। वहां की अंधेरी ओरी में आचार्य भिक्षु ने अध्यात्म की लौ प्रज्वलित की जो आज लाखों लोगों का पथ प्रदर्शित कर रही है। इसी केलवा के चातुर्मास में एक घटना घटित हुई। एक दिन सभी साध्वियां गहरी नींद में सो रही थी। रात्रि के लगभग अर्धकाल में साध्वी कंचन कुमारी के सीने पर काला नाग आकर बैठ गया। अकस्मात् नींद खुली। ठण्डा ठण्डा–सा अनुभव हुआ। उन्होंने तत्काल हाथ का झटका लगाया। सांप उछल कर किसी को दखल न पहुंचाता हुआ एक कोठरी में जाकर फुफकारने लगा। सभी साध्वियां जाग गई। 'ऊँ भिक्षु' के नाम का जप चालू कर दिया। सेवा में रहने वाली बहिन गंगा को जगाया। पड़ौसी अबांलालजी कोठारी को उठवाया। अबांलालजी अपने लड़के को साथ में लेकर सांकल आदि लेकर वहां आए। सांप को पकड़ा गया पर दरवाजे से बाहर निकलते–निकलते सांप अदृश्य हो गया। भिक्षु स्वामी के मंगलकारी, विघ्न विनाशक जाप से उपद्रव अपने आप शान्त हो गया। ऐसा लगता है कोई इष्ट आत्मा थी इसलिए किसी को परेशान नहीं किया। विघ्न सहज ही टल गया।

पंचऋषी स्तवन (विघ्न हरण) का प्रभाव–

वि. सं. 2008 का चातुर्मास बाव (गुजरात) में सानन्द चल रहा था। ऐसा माना जाता है कि गुजरात एक धार्मिक क्षेत्र है। वहां धर्म ध्यान का अच्छा प्रभाव है। वहां के श्रावक श्रद्धाशील भी हैं, तपस्या के क्षेत्र में भी आगे रहते हैं।

एक बार का प्रसंग है। बाव के तीस युवक एक साथ अठाई के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रत्याख्यान के लिए तैयार हुए। साध्वी श्री जी ने सभी की भावनाओं को देखते हुए फरमाया– तुम सब को एक साथ अठाई जैसी बड़ी तपस्या का प्रत्याख्यान कैसे करवाऐं, प्रतिदिन प्रत्याख्यान कर लिया करो।'' यह क्रम अच्छा रहेगा। पर बाव के श्रावकों में तपस्या के प्रति इतनी श्रद्धा है कि एक संकल्प के साथ पूरे थोकड़े का एक साथ प्रत्याख्यान करना चाहते थे। साध्वी श्री जी ने उनकी भावना को मान देते हुए विचार किया। उसी समय निकट में उपासनारत श्रावक चुन्नी भाई कहने लगे 'महाराज डीकरों पर कैम दया करो छो?चुन्नी भाई का संकेत एवं युवकों की प्रबल भावना देखकर साध्वी श्री ने 15 युवकों को अठाई तप का एक साथ प्रत्याख्यान करवा दिया। तपस्या में शारीरिक बल की अपेक्षा मनोबल ज्यादा काम करता है। कभी अन्तराय कर्म का ऐसा योग बन जाता है कि तपस्या में विघ्न, बाधाएं आने लग जाती है। उन युवकों में से एक– प्रभुभाई को तेले के दिन अचानक बैठे–बैठे ही बेहोशी आ गई। मूर्च्छित स्थिति को देखकर एक बार तो सभी घबरा गये। डॉक्टर को दिखाने का चिन्तन हुआ, सभी चिन्तातुर थे। उसी समय साध्वीश्री ने पंच ऋषि स्तवन (विघ्न हरण की ढाल) का संगान प्रारम्भ कर दिया। उस स्तवन का इतना प्रभाव हुआ कि गीतिका गाते गाते ही प्रभु भाई की मूर्च्छा टूट गई। वे सचेत हो गये। उपचार के लिए कहा गया पर उनका संकल्प और मनोबल इतना मजबूत था कि दृढ़ विश्वास के साथ कहने लगे– मैं अठाई तप को पूरा कर के ही रहूंगा। इस परीक्षा की घड़ी में वे खरे उतरे। अठाई तप सानन्द सम्पन्न हुआ। प्रभु भाई व उनके परिवार वालों ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा– साध्वीश्री! आपके प्रति सदा आभारी रहेंगे। आपने कृपा कर हम पर जो अनुकम्पा की, हम आपके उपकार को कभी नहीं भूल पायेंगे।

श्रम की सार्थकता–

मेवाड़ क्षेत्र का दर्शनीय स्थल, झीलों की नगरी– उदयपुर, जहां के प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा निराली और सुरम्य है। इस पर्यटन स्थली को देखने के लिए हजारों पर्यटक आते रहते हैं। सौन्दर्य के साथ–साथ यह आध्यात्मिक नगरी भी रही है। उदयपुर में साध्वीश्री का

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चातुर्मास भी सफल और सार्थक रहा। चातुर्मास के दौरान अनेक प्रकार की गतिविधियां हुई। उनमें से एक विशेष कार्यक्रम रहा– महिला–संगठन का निर्माण। उदयपुर सुजानगढ़ आदि कई क्षेत्रों में महिला मंडल के गठन निर्माण में साध्वीश्री की विशेष भूमिका रही। साध्वीश्री की प्रेरणा से कई क्षेत्रों की महिलाओ में नई जागृति आई। उदयपुर में यहां के पूर्व महाराजा भूपाल सिंह जी की उपस्थिति में अहिंसा दिवस का कार्यक्रम मुनिश्री कनकमल जी स्वामी एवं साध्वीश्री के संयुक्त सान्निध्य में प्रभावी रहा। अहिंसा पर सभी के विचारों की अभिव्यक्ति काफी प्रभावी रही। इस कार्यक्रम से धर्मसंघ भी अच्छी प्रभावना हुई।

अनमोल सुरक्षा

साध्वी श्री उदयपुर चोखले का स्पर्श करती हुई दिवेर पधारी। दिवेर तेरापंथ का इकरंगा क्षेत्र है। वहां के श्रावक–श्राविकाओं में धर्मसंघ के प्रति गहरी श्रद्धा व समर्पण के भाव हैं। एक दिन अचानक एक घटना घटित हुई। एक श्राविका साध्वीश्री के ठिकाने में सामायिक कर रही थी। सामायिक में ही एक संवाद मिला कि उक्त बहिन का छोटा बच्चा ऊपरी मंजिल से नीचे गिर गया है और बेहोश हो गया है। समाचार सुन कर मां का दिल बैचेन हो गया, मोहवश सामायिक में रोने लग गई। साध्वीश्री ने स्थिति को संभालते हुए बहिन को सांत्वना दी, प्रेरणा देने लगी कि तुम सामायिक में धैर्य रखो। स्वामीजी का जाप करो। धर्म के प्रताप से सब ठीक रहेगा। सब कुशल होगा। तुम चिन्तित होकर आर्त्तध्यान मत करो। आराध्य का जाप सुरक्षा का कवच बनेगा। सामायिक में समता का भाव रखो। साध्वीश्री की प्रेरणास्पद वाणी सुन कर बहिन कुछ आश्वस्त हुई। प्रेरणा काम कर गई। 'भिक्षु स्वाम–भिक्षु स्वाम' की लगन लग गई। एक चित्त होकर जाप करने लगी। सामायिक का कालमान पूर्ण हुआ। बहिन अपने घर पहुंची। बच्चे को संभाला। बच्चा मूर्च्छित था। मां ने दृढ़ आस्था के साथ फिर स्वामीजी का जप शुरू कर दिया। जाप का प्रभाव हुआ। दृढ़ संकल्प शक्ति और विश्वास की विजय हुई। बालक की मूर्च्छा टूटने लगी। धीरे–धीरे होश आ गया और मां की आस्था चौगुनी हो गई। चाहे कैसी ही परिस्थिति आये, यदि देव गुरु–धर्म के प्रति दृढ़ आस्था है, श्रद्धा है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तो निश्चित रूप से समस्याओं का समाधान मिल जाता है। नई शक्ति का संचार हो जाता है। पूरा परिवार साध्वी श्री से बहुत प्रभावित हुआ और कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए निवेदन किया। अपकी प्रेरणा एवं संबल से अनमोल सामायिक और बालक दोनों सुरक्षित रह गये।

नया मोड़ : नई जागृति–

तेरापंथ की उद्भव स्थली अंधेरी ओरी– केलवा में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के द्वारा उद्घोषित ''तेरापंथ द्विशताब्दी का भव्य आयोजन। वि.सं. 2017 की आषाढ़ी पूर्णिमा का विशेष कार्यक्रम इस पावन स्थली पर। इसी दिन संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि की 13 दीक्षाएं हुई। कार्यक्रम की सम्पन्नता के बाद राजनगर चातुर्मास के लिए प्रस्थान। तेरापंथ की जन्मभूमि भी मेवाड़ और साध्वी कंचन कुमारी जी की जन्मभूमि भी मेवाड़ (राजनगर)। जन्मभूमि होने से साध्वी श्री को गुरुदेव तुलसी के चातुर्मास में सहज सन्निधि का अवसर प्राप्त हो गया। मेवाड़ में विराजित सभी साधु–साध्वियों का पावस प्रवास गुरु सन्निधि में रहा। मेवाड़वासियों में एक अनोखी खुशी का माहौल और नया जोश था। तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के उपलब्धि भरे चातुर्मास का अनूठा नजारा देखकर हजारों–हजारों लोगों ने अपने भाग्य की सराहना की। सैकड़ों साधु–साध्वियों के लिए वह क्षण स्मृति पटल पर सदा–सदा के लिए अंकित हो गया। चार महिनों तक पूज्यवर की अमृतमय वाणी की वर्षा से जो आनंदानुभूति हुई, उसे शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। सभी परिवारों ने भी चातुर्मासिक काल का पूरा लाभ उठाया।

उस वक्त मेवाड़ रूढ़िवाद की कई परम्पराओं से जकड़ा हुआ था। घूंघट प्रथा, पति वियोग पर महिनों एक कोने में बैठे रहना, काले कपड़े पहनना, कई महिनों तक घर में शोक रखना आदि कई रूढ़िपूर्ण परम्पराएं मेवाड़ की बहिनों के लिए शाप बनी हुई थी। पूज्य गुरुदेव ने नारी समाज की पीड़ा पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। आने वाले युग की सोच पर चिन्तन किया और इस कुंठित स्थिति का अंकन कर नये चिन्तन की स्फुरणा कर एक अभियान चलाया, जिसका नाम रखा– ''नया मोड़''।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नया मोड़ अभियान चातुर्मास के दौरान राजनगर से प्रारम्भ किया। एक नये युग का प्रारम्भ यहां हुआ। पूज्य गुरुदेव ने अपनी श्रम बूंदों से इस अभियान को गतिशील बनाया। सभी साधु–साध्वियों तथा अपने अनुयायियों से अभियान को सफल बनाने का आह्वान किया। मेवाड़ जैसे रूढ़िग्रस्त क्षेत्र में इस तरह की क्रान्ति का संचार करना उस समय भारी भरकम और आश्चर्यकारी कार्य था। साध्वी कंचन कुमारी जी को भी इस कार्य में नियोजित किया गया। साध्वीश्रीजी के श्रमपूर्वक प्रयास ने सैकडों बहिनों को नए मोड़ के लिए प्रेरित किया और उन्हें रूढ़ियों से मुक्ति दिलाई। गुरु इंगित के अनुसार इस प्रकार महिला जागृति के अभियान में साध्वीश्री सहभागी बनी और धर्म संघ की प्रभावना हुई।

किशनगढ़ का ऐतिहासिक चातुर्मास

अजमेर जिले का व्यापारिक क्षेत्र किशनगढ़ अच्छा धार्मिक क्षेत्र है। यहां पर तेरापंथ के द्वितीय आचार्य भारमलजी का प्रथम पधारना हुआ। उस समय वहां तेरापंथी परिवार एक भी नहीं था, उनका स्थानकवासी साधुओं के साथ शास्त्रार्थ भी हुआ। श्री महेशदासजी मुथा ने भारमलजी स्वामी से गुरु धारणा स्वीकार की। धीरे–धीरे और परिवारों में वृद्धि हुई। यहां प्रथम चातुर्मास साध्वी दरियावांजी ने किया। बाद में कई सालों तक तेरापंथ के साधु–साध्वियों का कोई चातुर्मास नहीं हुआ, शेषकाल में भी विराजना कम ही हुआ। विक्रम संवत् 2037 में साध्वी कंचनकुमारी जी का वहां पधारना हुआ। शेषकाल में विराजना भी हुआ। दिगम्बर, अग्रवाल, स्थानकवासी समाज के लोगों से साध्वीश्री ने सम्पर्क साधा। साध्वीश्री से प्रभावित होकर दिगम्बर जैन हाई स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सरदार सिंह जी अग्रवाल, समाज की प्रमुख समाजसेवी श्रीमती शशिकलाजी, स्थानकवासी समाज के श्रावक श्री नाहरमलजी कोठारी एवं तेरापंथ समाज के श्री भोमराजजी भाभड़, भंवरलालजी बाफना आदि प्रमुख लोगों ने आचार्यश्री तुलसी के दर्शन कर साध्वीश्री का किशनगढ़ चातुर्मास करवाने का निवेदन किया। गुरुदेव ने सभी की भावनाओं को ध्यान में रखकर महती कृपा कर साध्वीश्री का उस वर्ष का चातुर्मास किशनगढ़ फरमा दिया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अच्छे शकुन

किशनगढ़ चातुर्मासिक प्रवेश के वक्त एक गाय अपने बछड़े को दूध पिलाते हुए सामने खड़ी थी। यह दृश्य देख कर उपस्थित लोगों ने कहा– महाराज! शकुन बहुत अच्छे हुए हैं। लगता है आपका चातुर्मास बहुत सफल होगा। जैन शासन की अच्छी प्रभावना बढ़ेगी। लम्बे अंतराल के बाद चातुर्मास होने जा रहा है। सेवाभावी बहिन शशिकला के मकान में आपका चातुर्मासिक प्रवास हुआ। श्रद्धा के घर कम होते हुए भी अन्य लोगों का भरपूर सहयोग मिला। अग्रवाल, माहेश्वरी, दिगम्बर, मुस्लिम आदि कई समाज के लोगों में प्रभावना बढने लगी। पाठशालाओं में अणुव्रत का अच्छा प्रचार–प्रसार हुआ। पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान का शिविर आयोजित किया गया। इसमें पारमार्थिक शिक्षण संस्था की आठ मुमुक्षु बहिनों ने शिविर संचालन में सहयोग किया। शिविर में प्रेक्षाध्यान व योग क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया गया। इसी क्रम में आदित्य मील व सूरज मार्बल कम्पनी में कामगारों से सम्पर्क कर सैकड़ों मजदूरों को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलवा कर अणुव्रत के नशामुक्त अभियान को गतिशील बनाया। संघ की बढती प्रभावना को देखकर कतिपय ईर्ष्यालु लोगों ने विरोध के स्वर उठाने शुरू कर दिए पर गुरुप्रसाद से व साध्वीश्री की सूझबूझ से विरोधियों का प्रभाव आगे नहीं बढ सका और चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ।

पूज्यवर का कृपा प्रसाद

किशनगढ का चातुर्मास पूर्ण कर साध्वीश्री ने आराध्यदेव गुरुदेव श्री तुलसी के दर्शन किए। पूज्य गुरुदेव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए फरमाया– साध्वी कंचनकुमारी अच्छा कार्य कर के आई है। एक बार संतों की संगोष्ठी में भी गुरुदेव श्री तुलसी ने फरमाया– ''साध्वी कंचन कुमारी एक भद्र प्रकृति व सरल स्वभाव वाली साध्वी है, इतनी पढी लिखी नहीं होने पर भी अभी किशनगढ पावस में अणुव्रत व जीवन विज्ञान का ठोस काम कर के आई है।'' कृपा प्रसाद के रूप में पूज्यवर ने फरमाया– अजमेर, किशनगढ क्षेत्र के लोग तुम्हारे श्रम से प्रभावित हैं। अतः पुनः उसी क्षेत्र को सम्भालो। पूज्यवर का निर्देश प्राप्त कर साध्वीश्री ने दूसरा चातुर्मास भी किशनगढ ही किया। उस समय

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

किशनगढ में सभा भवन नहीं था। शेषकाल में भी ठहरने की समस्या ही थी। दो महिनों में चार बार स्थान परिवर्तन करना पड़ा। अतः दूसरा चातुर्मास स्थानकवासी सम्प्रदाय के पुष्कर सेवा समिति के भवन में किया। हालांकि सभा भवन निर्माण की योजना प्रथम चातुर्मास में ही बन गई, पर कतिपय अपरिहार्य कारणों से योजना मूर्त्त रूप नहीं ले सकी। कुछ अन्तराल के बाद तीसरा चातुर्मास भवन में किया।

विक्रम संवत् 2041 का चातुर्मास राजस्थान एवं पाकिस्तान की सीमा पर बसे शहर बाड़मेर में हुआ। इस वर्ष आचार्य तुलसी के जन्मदिवस को विस्तृत रूप में मनाया। मुख्य अतिथी के रूप में तत्कालीन राजस्थान के वित्तमंत्री श्रीचन्दनमलजी बैद ने अपनी उपस्थिति दी। स्थानकवासी समाज की साध्वियों ने भी अपनी सहभागिता देकर कार्यक्रम की सफलता में सहयोग दिया। इस प्रवास में स्थानीय सात विद्यालयों में अणुव्रत प्रचार–प्रसार के कार्यक्रम आयोजित किए गए। साध्वीश्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर लगभग 1000 विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रत नियम के फार्म भरे। इस दौर में एक कार्यक्रम स्थानीय वाल्मिकी समाज के लोगों के बीच भी रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता तत्कालीन जोधपुर के विधायक श्री अशोकजी गहलोत ने की। अच्छी उपस्थिति में प्रभावी प्रेरणापद प्रवचन हुआ। प्रभावित होकर कई हरिजन व्यक्तियों ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के पश्चात श्री अशोकजी ने भी साध्वी श्री के साथ कई हरिजन घरों का स्पर्श किया। उनके घरों की स्वच्छता को देखकर श्रीमान अशोकजी ने कहा– ये लोग सफाईकर्मी होते हुए भी अपने आश्रमों में अच्छी सफाई रखते हैं। इस चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने साध्वीश्री को बाड़मेर क्षेत्र में ही विचरने का निर्देश दिया। गुरुदेव जोधपुर का चातुर्मास संपन्न कर बाड़मेर की तरफ पधारे। आराध्य की अभिवंदना एवं संघभक्ति का अवसर सहज ही प्राप्त हुआ। इस अवसर पर वाल्मिकी समाज का सम्मेलन पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रखा गया। गुरुदेव ने साध्वी विनयश्री को वक्तव्य देने को कहा। गुरुदेव ने वाल्मिकी समाज को संबोधित करते हुए फरमाया– ''मैं आज आप लोगों के बीच आया हूं। कुछ लेने के लिए, पर न मुझे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वोट चाहिए, न नोट चाहिए और न कोई अन्य तरह की भेंट चाहिए। मुझे चाहिए आपके जीवन की खोट। पूज्यवर के आशीर्वचन से प्रभावित होकर कई व्यक्तियों ने व्यसन मुक्ति का संकल्प लिया।

कर्ज उतारने का स्वर्णिम अवसर :–

जसोल मर्यादा महोत्सव पर विक्रम संवत् 2042 के सेवा केन्द्रों पर सेवा करनेवाले साधु– साध्वियों की नियुक्ति के क्रम में सर्वप्रथम लाडनूं सेवा केन्द्र के लिए दो सिंघाडो की नियुक्ति की। 1. साध्वी कंचनकुमारी, राजनगर 2. साध्वी भीखांजी, लाडनूं। उस वर्ष एक मास अधिक था। आगामी सिंघाडा सेवा में पन्द्रह दिन देरी से पहुंचा। अतः कुल मिलाकर आपको 13 मास 15 दिनों की सेवा का लाभ प्राप्त हुआ। साध्वी कंचनकुमारीजी बड़ी सेवाभावी साध्वी थी। वृद्ध साध्वियों की पूर्ण मनोयोग से सेवा करती थी। वृद्धों के लिए औषधि आदि की जरूरत पडते ही तुरंत व्यवस्था करवा देती थी। वृद्धों की सेवा में स्वयं लग जाती। उन्हें स्वाध्याय, जप आदि करवाने में भरपूर सहयोग देती। उनका एक ही लक्ष्य रहता कि सभी वृद्ध साध्वियां चित्त समाधि से रहे। लाडनूं का श्रावक समाज भी सदा अनुकूल रहा है। सहवर्तिनी साध्वियां भी गोचरी, व्याख्यान आदि कार्यों में पूर्ण सजग रहती। इस वर्ष साध्वीश्री के सान्निध्य में एक प्रभावशाली संथारा भी हुआ। मूल ठिकाने के निकट श्री सागरमलजी खूबचन्दजी दूगड का निवास था। वहां उनकी माताजी गोगीदेवी के मन में तपस्या, संलेखना–संथारा की भावना जागृत हुई। उन्होंने साध्वीश्री के समक्ष अपनी भावना रखी और मजबूत मनोबल के साथ तपस्या प्रारंभ कर दी। चोले (चार दिनों) के तप में परिवार वालों की सहमति एवं तपस्विनी की प्रबल भावना को देखते हुए साध्वीश्री ने विधिवत संथारे का प्रत्याख्यान करवा दिया। संथारे के प्रत्याख्यान के बाद बहिन को स्वस्थता का अनुभव होने लगा। उनके पेट में लगभग सात किलो की गांठ थी। उस भयंकर वेदना को सहन करती हुई बहन संथारे का क्रम आगे बढाने लगी। सन्तों, साध्वियों समणियों एवं मुमुक्षु बहिनों का धर्माराधना में अच्छा सहयोग रहा। चौबीस दिनों के लम्बे अनशन में भी बहन की सहनशीलता, सजगता और संकल्प बल देखने योग्य था। संथारे के दौरान कुछ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उपद्रव भी हुआ पर देव–गुरु–धर्म के प्रताप से शान्त हो गया। कुछ समय पूर्व तपस्विनी को अंत समय का आभास भी हो गया। साध्वियां दर्शन देने गई तब बहिन ने कहा–''महाराज! आज मेरे जाने का समय आ गया है। आज मुझे जाना है।'' साध्वियों द्वारा समय पूछने पर बताया– छः बजे जाना है। समय की जानकारी देने पर उपस्थित सभी को आश्चर्य हुआ और समय पर सभी उपस्थित हो गए। सभी के देखते–देखते लोगस्स का पाठ सुनते–सुनते ठीक छः बजे एक हल्की हिचकी आई और संथारा संपन्न हो गया। बहिन की जीवन यात्रा सफल हो गई। संथारा प्रभावी रहा। धर्म संघ की अच्छी प्रभावना हुई।

गुरु प्रवचनों की सिद्धी का प्रभाव :–

लाडनूं, योगक्षेम वर्ष की परिसम्पन्नता और मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साध्वी कंचनकुमारी जी जयपुर का चातुर्मास सम्पन्न कर गुरु दर्शन के लिए पधारी। गुरु सन्निधी का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने मर्यादा महोत्सव पर चातुर्मासों की घोषणा करते हुए साध्वीश्री का चातुर्मास उन्हीं की जन्मभूमि राजनगर में फरमाया। पूज्यवर का आशीर्वाद लेकर लाडनूं से विहार कर मेवाड़ की ओर प्रस्थान किया। लगभग 10 कि. मी. पर सिंघीजी के कुए पर पधारी। कुछ समय पश्चात् खड़े–खड़े ही अचानक गिर गई। उसी समय डॉक्टर सेठिया का उधर से निकलना हुआ। यह संयोग ही था। सहवर्ती दो साध्वियां सड़क पर खड़ी थी। डॉ सेठियाजी ने रूककर दर्शन किए। उन्हें सारी स्थिति बता दी। डॉ. ने साध्वीश्री को देखा और कहा कि इनके पैर में फ्रेक्चर हो गया लगता है। मैं अभी गुरुदेव के दर्शन करूंगा और सारी स्थिति निवेदन करूंगा। समाचार जब गुरुदेव के पास पहुंचे। तत्काल गुरुदेव ने समणी मंगलप्रज्ञाजी एवं समणी मल्लिप्रज्ञाजी को सेवा के लिए भेज दिया। रात्रि प्रवास वहीं पर हुआ। प्रातः पूज्यवर ने दो साध्वियों– साध्वी निर्वाणश्रीजी एवं साध्वी संगीतश्रीजी को साधन लेकर भेज दिया। सिंघीजी के कुए से हम सभी साध्वियां पुनः लाडनूं पहुंच गई। लाडनूं के मंगलम् हॉस्पिटल में डॉ विजय सिंह घोड़ावत एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ गोविन्दसिंह जी राठौड़ की देख–रेख में इलाज चालू किया गया। स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों का निर्णय रहा कि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

इनको कहीं बड़े अस्पताल में रेफर कर दिया जाए। परंतु गुरुदेव की दृष्टि यही रही कि जहां तक हो सके, इनका उपचार यहीं पर करवाया जाए तो अच्छा है। चिकित्सा की जितनी सुविधाएं यहां उपलब्ध हो सके, ऐसा प्रयास यदि किया जाए तो यह शीघ्र खड़ी हो सकेगी। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से अजमेर के डॉ. सक्सेना साहब के सहयोग से मंगलम के चिकित्सकों ने सुप्रयास कर भिन्न समाचारी में उनका सफल ऑपरेशन कर दिया। ऑपरेशन में ब्लड की जरूरत हुई। पारमार्थिक शिक्षण संस्था की बहिनें, समणीजी एवं सहवर्ती साध्वियों ने अपना ब्लड टेस्ट करवाया। ब्लड विसर्जन के लिए सभी तैयार थे पर ब्लड ग्रुप मिलना आवश्यक होता है। साध्वीश्री का ब्लड ग्रुप लिया गया। प्रायः सभी का ग्रुप 'ओ' मिला पर भाग्य से मुमुक्षु पुनीता (साध्वी परमयशाजी) समणी श्रुतप्रज्ञाजी (साध्वी सौभाग्य यशाजी) इन दोनों का ब्लड ग्रुप 'ए' मिल गया और साध्वीजी के ऑप्रेशन में इन दोनों के ब्लड का उपयोग किया गया। हमारे धर्मसंघ की यह विशेषता रही है कि हर परिस्थिति में संघ का प्रत्येक सदस्य सेवा के लिए समर्पित हो जाता है। इलाज के दौरान पूज्य गुरुदेव, युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी, साध्वी प्रमुखाजी आदि साधु–साध्वियां दर्शन देने एवं शक्ति प्रदान करने के लिए पधारते रहते।

एक दिन पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी हॉस्पिटल दर्शन देने के लिए पधारे। साध्वीश्री से कहा– कंचन कुमारी जी! अब हिम्मत रखनी होगी। हिम्मत की कीमत है। देखो! प्रमुखाश्री कितनी बार तुम्हें दर्शन देने आ गए हैं, बार–बार तुम्हें सम्भालती है। तब साध्वीश्री ने अपने अन्तर्भाव को प्रकट करते हुए कहा कि महाश्रमणीजी मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करावें, मैं शीघ्र स्वस्थ होकर विहार कर सकूं। कहीं एक जगह स्थिर न रहकर विचरण करती रहूं। सचमुच पूज्यवरों का आशीर्वाद उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ। ऑपरेशन सफल हुआ। स्वस्थता के उपरांत गुरु आज्ञा से सुजानगढ पड़िहारा चातुर्मास किया।

विक्रम संवत् 2047 में आपका चातुर्मास सुजानगढ़ के लिए फरमाया। लाडनूं से सुजानगढ का विहार साधन द्वारा हुआ। उसमें साध्वी विमलप्रज्ञाजी एवं साध्वी कान्तयशाजी का सहयोग रहा। उस

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वर्ष सुजानगढ में दो चातुर्मास– मुनि श्री जंवरीमलजी स्वामी तथा साध्वीश्री का हुआ। चातुर्मास काल में विविध कार्यक्रमों की आयोजना के साथ स्थानीय महिला मण्डल में नई जागृति आई, आपसी वैमनस्य दूर हुआ। त्रिदिवसीय महिला प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 51 बहिनों ने भाग लिया। पूज्यवर के पाली चातुर्मास में महिला मण्डल ने संघ रूप में दर्शन किए।

चातुर्मास की परिसम्पन्नता पर साध्वियां गोचरी के लिए गई हुई थी। उस समय श्री कमलजी डोसी की माताजी श्रीमति फत्तूदेवी डोसी ने कहा– महाराज! अभी आपको विहार नहीं करना है। साध्वी श्री ने कहा– मांजी! ऐसा मत कहो। चातुर्मास सम्पन्नता के बाद विहार करना अपना विधान है। तब बहिन ने अपने मन की बात प्रकट करते हुए निवेदन किया– मेरी तपस्या, संथारा करने की भावना है, आपके सान्निध्य की मुझे जरूरत है। आपका सहयोग मिले तो मेरी भावना प्रबल रहेगी। सचमुच! दृढ़ मनोबल के साथ बहिन ने अर्ज करवा दी। उनके पुत्र कमलजी डोसी ने पाली में आचार्य प्रवर के दर्शन कर माताजी की तपस्या एवं संथारे की भावना का निवेदन किया। पूज्यवर ने बहिन की प्रबल भावना के समाचार सुनकर यथा सम्भव संथारा पचखाने का निर्देश फरमाया। साथ ही यह भी फरमाया कि साध्वी कंचनकुमारी जी! जब तक संथारा चले, वहीं रुक सकती है।

मुनि श्री जंवरीमलजी स्वामी ने संथाऐ का विधिवत् प्रत्याख्यान करवाया। बहिन फत्तूदेवी के लगभग 31 दिनों का लंबा संथारा चला। परिजनों ने संथारे के क्रम के अनुसार तप का क्रम चलाया। संथारे के 21वें दिन 21 नवकारसी, 22वें दिन 22 प्रहर, 23वें दिन 23 एकासन इस तरह तपस्या का क्रम भी अच्छा चलता रहा। साध्वीश्री का सान्निध्य बहिन के दृढ मनोबल व समता भाव की वृद्धि में बहुत उपयोगी रहा। इस काल में लाडनूं से साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी आदि साध्वियों एवं समणी वर्ग का बराबर आगमन हुआ। इस तरह सुजानगढ के श्रद्धाशील डोसी परिवार में यह संथारा गौरवमय हुआ। पूरे आसपास के क्षेत्र में संथारे की एवं धर्मसंघ की प्रभावना हुई। साध्वीश्री एवं सहवर्ती साध्वियों के प्रेरणा से तपस्वी बहन को एवं डोसी परिवार को बड़ा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सम्बल मिला। आज भी डोसी परिवार साध्वी श्री के प्रति कृतज्ञ भाव रखता है।

असहनीय वेदना–महानिर्जरा

साध्वी कंचन कुमारीजी आदि पांच साध्वियों का ईडवा में पांच वर्ष तक लगातार स्थिरवास रहा क्योंकि सहवर्त्ती साध्वी ज्ञानाजी वृद्ध थी। प्रवास सानन्द सुखद चल रहा था। अचानक असाता वेदनीय कर्म का ऐसा उदय हुआ कि साध्वीश्री के पूरे शरीर पर खुजली का प्रकोप हो गया। कारण क्या बना यह ज्ञात नहीं हो पाया। पूरे शरीर में फफोले हो गए और रक्त में पीप हो गया। वेदना बहुत असह्य हो गई। डेगाना के डॉक्टर महेश्वरी ने देख कर बताया कि लगता है शरीर में कोई बड़ा इन्फैक्शन हो गया है। लम्बे समय तक इलाज चल सकता है। इलाज चालू हो गया। पूरे शरीर में सूजन हो गई। वेदना सहन करनी मुश्किल हो रही थी। आहार करने में भी दिक्कत हो रही थी। लिक्विड आहार से ही काम चलाया जा रहा था। ऐसी भयंकर वेदना को भी वे समभावों से सहन कर रही थी। मुनि खंदक की वेदना की याद ताजा हो रही थी। इस विषम परिस्थिति में इतनी वेदना को समता से सहन कर कर्मों की महान निर्जरा की। कभी अपने मुंह से उफ तक नहीं कहा। हम साध्वियों ने अपनी आंखों से देखा कि उनके शरीर की मोटी–मोटी चमड़ी उतरने लगी। साध्वीश्री ने बीमारी को कर्म निर्जरा का हेतु बनाया, कभी हीन भावना को स्वीकार नहीं किया। आत्म बल से तन की वेदना सहन की। संकल्प बल एवं मनोबल से बीमारी का निदान कर पूर्ण स्वस्थ हो गई।

ईडवा के लम्बे प्रवास में कई तरह के धार्मिक आयोजन आयोजित किए गए। प्रचुर मात्रा में जनसम्पर्क कर अणुव्रत की जानकारी लोगों कों दी। इस काल में स्थानीय 'आचार्य श्री तुलसी राजकीय चिकित्सालय' के शिलान्यास समारोह में उपस्थित तत्कालीन राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री ललितकिशोर जी चतुर्वेदी के मुख्य आतिथ्य में समारोह का आयोजन स्थानीय जैन समाज ने किया। इसमें साध्वी श्री की ओर से साध्वी विनयश्री एवं साध्वी पावन प्रभा ने प्रतिनिधित्व करते हुए हजारों की संख्या में उपस्थित जनमेदिनी में आचार्य तुलसी के अवदानों एवं अणुव्रत पर प्रवचन दिया। मंत्रीजी ने गुरुदेव के अवदानों की सराहना करते हुए श्रद्धाभाव समर्पित किए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ईडवा के प्रवास में एक बार राजस्थान सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया ने साध्वीश्री के दर्शन किए। करीब बीस–पचीस मिनट तक सेवा की। उन्होंने बताया कि पूज्य आचार्य श्री से तो मैं बहुत प्रभावित हूं, बराबर दर्शन किया करता हूं। वार्तालाप में साध्वियों ने अर्हम् गीत का संगान कर मंत्रीजी को सुनाया। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री का यह गीत तो सम्प्रदायातीत है, जन–जन को प्रभावित करने वाला व्यापक गीत है।

काम से कोई छोटा या बड़ा नहीं

एक बार साध्वीश्री शेषकाल में राजगढ प्रवास कर रही थी। एक दिन रामकुमारजी सरावगी दर्शन करने के लिए आए। साध्वी कंचनकुमारीजी रजोहरण से अपने स्थान की सफाई कर रही थी। रामकुमारजी ने सहज ही पूछ लिया– मत्थऐण वन्दामि! बड़े महाराज कहां हैं? आप सुनते ही मुस्काराने लगे। इतने में अन्य साध्वियां वहां आ गई और कहा– बड़े महाराज तो आप ही हैं। तब सरावगी जी ने कहा– मत्थऐण वन्दामि! आप यह काम कर रही हैं! आप सफाई आदि का काम मत किया करो। तब साध्वी कंचन कुमारीजी ने फरमाया– काम करने से कोई छोटा या बडा नहीं हो सकता है। यह साध्वीश्रीजी के जीवन की विशेषता रही कि उन्होंने कभी अग्रगण्य पद का अहं नहीं किया। सरावगीजी ने कहा– महाराज! अब आपकी अवस्था काफी आ गई है। आप दिन में विश्राम किया करें। साध्वीश्रीजी ने सहज भाव से उत्तर दिया– अरे भाई! विश्राम के लिए तो रात ही काफी है। गुरुदेव फरमाया करते हैं कि एक काम के बाद दूसरा काम करना ही विश्राम है। इस तरह उन्होंने अपने जीवन के हर कार्य को बड़ी लगन और तत्परता से कर अपनी विशेष पहचान बनाई। 'कार्यान्तर होना ही विश्राम है' इस तथ्य को चरितार्थ किया। श्रम उनकी जीवन शैली का सूत्र बन गया। इसी का सुखद परिणाम था कि 92 वर्षों की उम्र तक स्वस्थ, मस्त और आत्मस्थ रही। कभी घुटनों और कमर दर्द जैसा अनुभव नहीं किया।

हाथ ही माला

साध्वी श्री कंचनकुमारी जी ने पंजाब यात्रा के एक दौरान गुरुदेव तुलसी से निवेदन किया– पूज्यवर! मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सरदारशहर विराज रहे हैं। वे मेरे संसार पक्षीय न्यातीले हैं। पंजाब जाते समय सरदारशहर में दर्शन करने की भावना है। कुछ उपकरण– टोपसिया, हस्तनिर्मित माला आदि भेंट करने की इच्छा है। गुरुदेव ने विनोद के स्वरों में फरमाया– मंत्री मुनि के हाथ ही माला हैं। वो माला लेकर क्या करेंगे! फिर भी यदि लेना चाहे तो तुम दे सकती हो। साध्वीश्री ने सरदारशहर में मंत्रीमुनि के दर्शन किए। कलात्मक माला भेंट की। तब मंत्रीमुनि ने वो ही शब्द दोहराए– ''मेरे तो हाथ ही माला है''। एक बार साध्वीश्री जी मंत्रीमुनि की सेवा कर रही थी। मंत्रीमुनि ने स्व–हस्तलिखित पन्ने देते हुए फरमाया ''आचार–विचार में सदा सजग रहना। गुरु आज्ञा व दृष्टि की आराधना करना। समर्पण की भावना रखना। मंत्री मुनि के प्रेरणा एवं पाथेय को सविनय ग्रहण कर जीवनोपरान्त इस शिक्षा की अनुपालना की। इसी का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि साध्वी ज्ञानांजी दीक्षित होकर साठ वर्षों तक, साध्वी सोहनांजी पैंसठ वर्षों तक, साध्वी विजयश्रीजी तिरसठ वर्षों तक और साध्वी पावनप्रभाजी दीक्षित होकर लगभग छब्बीस वर्षों तक निरन्तर उनकी नेश्रा में रही। साध्वी आत्मयशाजी ने भी नवदीक्षित होकर दो वर्षों तक सन्निधि प्राप्त की।

कण्ठस्थ एवं स्वरों का तालमेल

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने आपको अग्रगण्य बनाते हुए पूछा– कंचनकुमारी! क्या रामायण याद है?तहत् गुरुदेव। तब गुरुदेव ने फरमाया– गाकर सुनाओ। साध्वीश्री ने मधुर कण्ठों से रामायण के पदों का उच्चारण किया। पद्य सुनकर पूज्यवर ने फरमाया– मीठा गाती है, कण्ठ मधुर है, गायन शैली अच्छी है। साध्वीश्री को सहज ही पूज्यवर का आर्शीवाद प्राप्त हो गया।

उस समय अग्रणी की अनेक कसौटियों में यह भी एक कसौटी थी कि उनको रामायण कंठस्थ करना अनिवार्य था। प्रायः देखा जाता है कि अवस्था के साथ–साथ स्वर भी बदल जाता है किन्तु साध्वीश्री ने अपनी कंठों की मधुरता को अन्त समय तक बनाए रखा। 92 वर्षों की उम्र में भी जब हाजरी का वाचन करती, तब ऐसा लगता कि आप की वाणी में युवा जैसा ओज है। लगता ऐसा कि बढती उम्र के साथ आपकी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा भी बढ रही है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक बार गुरुदेव तुलसी राज की पुस्तकों का अवलोकन कर रहे थे। एक अंग्रेजी में लिखा पन्ना मिला। अग्रगण्य साध्वी मूलांजी आदि साध्वियां गुरु सान्निधि में उपस्थित की। पूज्यवर ने साध्वी मूलांजी को इंगित करते हुए पूछा– तुम्हारे में अंग्रेजी कौन पढती है?साध्वी मूलांजी ने कहा– कंचन कुमारी अभ्यास कर रही हैं। गुरुदेव ने फरमाया– अंग्रेजी तो ठीक है पर आगम का उच्चारण कैसा करती हो?गुरुदेव ने उत्तराध्ययन सूत्र का पन्ना देते हुए कहा– इसे पढो। साध्वी ने उत्तराध्ययन की गाथा का स्पष्ट उच्चारण किया। आचार्यश्री ने फरमाया– उच्चारण अच्छा है, स्पष्ट है।

गुरु ही गेडीया है

साध्वीश्री के कुल्हे की हड्डी के ऑप्रेशन के बाद गेडिया (छडी) का सहारा लेकर चलती थी। एक बार लाडनूं में गुरु दर्शनार्थ जा रही थी। मन में इतनी प्रसन्नता थी कि गेडिया लेना ही भूल गई, गेडिया बाहर ही छोड़ दिया। गुरुदेव तुलसी ने फरमाया– कंचनकुमारीजी! क्या गेडिया छोड़ दिया है?तत्काल साध्वीश्री ने कहा– मेरे तो गुरु ही गेडिया है। गुरु के अनमोल शब्दों का ऐसा प्रभाव हुआ कि आपने बिना गेडिया चलना प्रारंभ कर दिया।

करूणा की रात

सन् 2001 अहिंसा यात्रा के प्रारंभिक काल में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का ईडवा पधारना हुआ। पूज्यप्रवर का वहां दो दिनों का प्रवास था। महाश्रमणी प्रमुखाश्रीजी के घुटनों में दर्द होने की वजह से पहले दिन ही विहार करने की भावना थी क्योंकि अगली मंजिल लम्बी थी। साध्वी कंचनकुमारीजी ने अपनी पछेवड़ी का पल्लू बिछाते हुए भाव भरा निवेदन किया कि आज की रात ईडवा में हमें मिलनी चाहिए। आज रात्रि सेवा का अवसर हमें प्रदान करावें। प्रमुखाश्रीजी ने विनयपूर्वक अर्जी को स्वीकार करते हुए अत्यन्त कृपा व करूणा भाव बरसाते हुए फरमाया–आज रात आपको सेवा कराने का भाव है। प्रमुखाश्री के विनम्र व्यवहार व वात्सल्य भरे वचनों से साध्वी श्री गद्‌गद् हो गई। कृपा की वह रात साध्वीश्री को मिल गई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

''चरैवेति–चरैवेति''

सन् 2005 रतनगढ़ में युवाचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में साध्वी समुदाय उपासना कर रहा था। उन सभी के बीच महती अनुकम्पा कर युवाचार्य प्रवर ने फरमाया– 'कंचनकुमारजी अवस्था के दशवें दशक में इतनी लम्बी यात्रा कर रही हैं। यह विरल उदाहरण है। इतनी लम्बी उम्र में आपने कहीं स्थिर वास नहीं किया। हमेशा चलती रहो, सदा गतिशील रहो, यही हमारी शुभ कामना है।' उस समय 91 वर्ष की अवस्था में साधन से 700 कि.मी. की लम्बी यात्रा कर जोधपुर जिले से चले थे। लाडनूं में पूज्यवरों के दर्शन कर बाद में 100 कि. मी. का चक्कर देकर श्रीडूंगरगढ पधारे। वहां चार दिवसीय प्रवास रहा और आगामी चातुर्मास जाखल (हरियाणा) में करने के लिए पधारे।

''जी'' कारे का आशीर्वाद

सन् 2005 का मर्यादा महोत्सव लाडनूं में था। साध्वी कंचनकुमारीजी आदि कुछ वर्ग बोथरा गेस्ट हाऊस में विराज रहे थे। अचानक युवाचार्य श्री महाश्रमणजी का बोथरा गेस्ट हाऊस में पधारना हुआ। पता लगते ही सभी साध्वियां वन्दना करने के लिए बाहर आई। साध्वीश्रीजी को भी जैसे ही मालूम हुआ, उठ कर बाहर आई और विधिवत् वन्दना की। श्रद्धेय युवाचार्यवर ने उच्च स्वर में जीकारा प्रदान करते हुए– 'जै कंचनकुमारीजी' फरमाया। वहां उपस्थित सभी साध्वियों ने कहा– आप कितनी सौभाग्यशाली हैं। वन्दना तो हम सभी ने की है, परन्तु नाम लेकर जीकारा तो केवल आपको ही मिला है। आप तो निहाल हो गई। पूज्यवर का आशीर्वाद रूप जीकारा आपको प्राप्त हुआ है। कई बार साध्वीश्रीजी बोथरा गेस्ट हाऊस से ऋषभ द्वार महाश्रमणी प्रमुखाश्रीजी की उपासना में पहुंच जाती। पहुंचते ही विधिवत् वन्दना करती। 91 वर्ष की अवस्था में भी उठ–बैठकर स्फूर्ति के साथ वन्दना करती। वात्सल्यमयी वाणी के साथ प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया– कंचनकुमारीजी! आप बैठकर ही वन्दना कर लिया करो। आप बार–बार उठती–बैठती हैं तो मुझे ऐसे लगता है कि कहीं आप गिर न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जाओ। यह सबके लिए सीखने की बात है। इस उम्र में भी विनम्रता और तत्परता के साथ सजगता रखते हैं और विधिवत् वन्दना करते हैं। यह बहुत बड़ी बात है।

सबसे युवा कौन?

अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी अहिंसा यात्रा करते हुए सुनाम (पंजाब) पधारे। पूज्यवरों का साध्वियों के प्रवास स्थल पर पधारना हुआ। साध्वी सोहनांजी की अस्वस्थता की स्थिति को देखकर पूज्यवर ने वहां विराज कर सेवा करवाई। पूज्यवर ने साध्वियों से पूछा– सब से युवा कौन है? हम सभी साध्वियां एवं वहां उपस्थित कार्यकर्ता में से कोई भी समझ नहीं पाए। तब समाधान करते हुए पुज्यवर ने साध्वी कंचनकुमारीजी की ओर संकेत करते हुए फरमाया– ये 92 वर्षों की युवा हैं। इनमें युवा जैसी उमंग व उत्साह है। गुरु के मुखारविंद से मिला प्रसाद उनकी गतिशीलता एवं श्रमशीलता के लिए सदा प्रेरणास्पद रहा।

कला कौशल पर महर

सन् 2006 धुरी मर्यादा महोत्सव पर साध्वीश्रीजी ने पूज्यवरों के दर्शन किए। उपहार स्वरूप दो रजोहरण व अन्य सामग्री भेंट की। दोनों रजोहरण कलापूर्ण थे। आचार्य प्रवर ने युवाचार्यवर से फरमाया– देखो महाश्रमणजी! दोनों रजोहरण कितने सुन्दर हैं, दोनों रजोहरण पूज्यवर ने स्वीकार कर लिए और कला को प्रशस्ति मिल गई।

सुनाम में पूज्यवरों का पांच दिवसीय प्रवास रहा। गुरु सेवा का स्वर्णिम अवसर साध्वी श्री के लिए स्मृति का खजाना बन गया। साध्वीश्री ने एक रजोहरण, दो पछेवडी भेंट की। आचार्य प्रवर ने फरमाया– अभी धूरी में दो रजोहरण भेंट किए हुए हैं। आगे कर देना। साध्वीश्री ने तत्काल निवेदन किया– आगे का क्या भरोसा है! मैं अपने हाथों से अभी भेंट करना चाहती हूं। यह सचमुच में अन्तिम भेंट ही थी। उस वर्ष श्रम कर के साध्वीश्री ने तीन रजोहरण व दो पूंजनियों का निर्माण किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बुढ़ापा क्यों नहीं आया?

मध्याह्न का समय था। साध्वियां पूज्यवर की उपासना कर रही थीं। विनोद के स्वरों में पूज्यवर ने फरमाया– कंचनकुमारीजी! तुम्हें बुढ़ापा क्यों नहीं आया?अपना अनुभव सुनाओ। विनयपूर्वक बद्धांजलि होकर साध्वीश्रीजी ने निवेदन किया कि गुरुशक्ति एवं गुरुदेव के पुण्य प्रताप से बुढापा मेरे से दूर रहा। तब साध्वी विनयश्री ने निवेदन किया– गुरुदेव! साध्वी कंचनकुमारीजी अपनी दैनिक चर्या में श्रम व आहार संयम का विशेष ध्यान रखती है। स्वीकृति की मुद्रा में आचार्यप्रवर ने फरमाया–ठीक ही है। श्रम करने से 92 वर्षों में भी बुढापा की अनुभूति नहीं होती। मजबूत मनोबल है इसलिए इनको बुढापा नहीं आया।

तुम अपना काम चालू रखो

सुनाम के प्रवास काल में एक दिन प्रवचन पंडाल में पूज्यप्रवर का प्रवचन चल रहा था कि सभी साध्वियां गुरुदेव श्री की पीयूषमय वाणी का अमृतपान कर रही थी। कुछ साध्वियां सिलाई का कार्य कर रही थी। पूज्यवर ने साध्वियों को सिलाई बन्द करने का निर्देश दिया। निर्देश प्राप्त होते ही सभी साध्वियों ने सिलाई का कार्य तुरंत बन्द कर दिया। साध्वी कंचन कुमारीजी उस समय युवाचार्यश्री के रजोहरण को व्यवस्थित कर रही थी। उन्होंने भी अपना कार्य बन्द कर दिया। तभी युवाचार्य की दृष्टि उधर पड़ी और तुरंत निर्देश फरमाया– तुम अपना काम बन्द मत करो। तुम अपना काम चालू रखो। यह था गुरु का आशीर्वाद।

ऊपर से देख लेना

सुनाम प्रवास का पांचवां दिन। हम साध्वियां परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सन्निधि में सेवा कर रही थी। अवसर देखकर साध्वी कंचन कुमारीजी ने निवेदन किया– पूज्यप्रवर! साध्वी विनयश्री सजग व आचारवान साध्वी हैं। अच्छे श्रम के साथ मेरे साथ काम कर रही है। मेरे मन की एक भावना है कि आप कृपा कर साध्वी विनयश्री का सिंघाड़ा करा दिरावें। गुरुदेव ने फरमाया– समय आने पर चिन्तन किया

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जाएगा। साध्वीश्री ने पुनः निवेदन किया– गुरुदेव! अभी कृपा कराओ तो मैं भी देख लूं। आचार्यश्री ने विनोद की भाषा में फरमाया– ऊपर से देख लेना।

श्रमनिष्ठ और आदर्श साध्वी

सन् 2006 धुरी मर्यादा महोत्सव, माघ शुक्ला षष्ठी, पदाभिषेक समारोह में प्रवचन पंडाल में पूज्यवर ने परिषद के बीच साध्वी श्री का नामोल्लेख करते हुए फरमाया– साध्वी कंचन कुमारीजी (राजनगर) एक श्रमनिष्ठ साध्वी हैं। जहां भी जाती है, क्षेत्रों में अच्छा काम करती है। धर्म संघ की अच्छी प्रभावना बढाती है। अभी पंजाब में अच्छा काम कर रही हैं। एक दिन साधु–साध्वियों की संगोष्ठी में अनुकम्पा बरसाते हुए फरमाया– साध्वी कंचन कुमारीजी एक आदर्श साध्वी है। इस तरह समय–समय पर पूज्यवरों का कृपा दृष्टि स्वरूप उपहार प्राप्त होता रहा। पंजाब यात्रा के दौरान पूज्यवर की सन्निधी और समय–समय पर प्रोत्साहन व आशीर्वचन साध्वीश्री के जीवन का स्वर्णिम दस्तावेज माना जा सकता है।

अभी जाने की जल्दी नहीं

सभी साध्वियां युवाचार्य प्रवर की उपासना कर रही थी। साध्वीश्रीजी ने युवाचार्यप्रवर से निवेदन किया– मेरे पुनः गुरु दर्शन व सेवा होगी कि नहीं! मुझे तो मुश्किल लगता है। युवाचार्यवर ने मधुर स्वरों में फरमाया– अभी जाने की जल्दी नहीं करनी है, अभी तो संघ की सेवा करनी है। सेन्चुरी में अभी आठ वर्ष अवशेष है। इस प्रकरण से ऐसा लगता है कि आपको सचमुच कुछ आभास हो गया। पुनः न तो वे गुरुदेव के दर्शन कर सकी और न ही सेवा कर सकी।

जीवन की विशेषताएं

कलाएं अनेक हैं। कलाओं में लिपिकला की भी बहुत प्रधानता रही है। पुराने समय में हस्तलिखित प्रतियां बहुत उपलब्ध होती थी। युगानुसार साध्वीश्री ने अपने कुशल हाथों से सुन्दर लिपी में बहुत लेखन कार्य किया। उन्होंने उत्तराध्ययन की जोड़, कालू कौमुदी,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बृहत्कल्प सूत्र, जैन रामायण, पांडव चरित्र, दीपजस, जयजस, हरीशचन्द्र चरित्र, मगनचरित्र, आदि अनेक ग्रंथों का लेखन किया। जहां भी लिखने की आवश्यकता होती, अपने दक्ष हाथों से, तन्मयता के साथ उसे लिपिबद्ध कर देती। आज भी उनके द्वारा लिखी गई प्रतियां देखते हैं तो ऐसा लगता है कि प्रिटिंग प्रेस में छपी हुई है। साध्वीश्री ने अपने जीवन में कंठस्थ ज्ञान को बड़ा महत्त्व दिया। सैकडों गाथाएं कंठस्थ की– दसवेआलियं, उत्तराध्ययन, बृहत्कल्पसूत्र, रामायण, सिन्दूर प्रकरण, छोटीनाम माला, शान्तसुधारस, पंचतिर्थी, लघुदण्डक, तेरह द्वार, ज्योतिष्चक्र, बावन बोल, पच्चीस बोल की चर्चा, जैन सिद्धान्त दीपिका, चोबीसी, आराधना आदि उन्हें कंठस्थ थे। 85वें वर्ष में व्यवहार बोध, तेरापंथ प्रबोध, तुलसी अष्टकम्, भिक्षु अष्टकम् आदि सैकडों गाथाएं कंठस्थ की। अन्तिम समय तक इस कंठस्थ पूंजी को संजोए रखा। गणाधिपति गुरुदेव ने संस्कार बोध में एक जगह कहा है–

'करें ज्ञान कंठस्थ, विघ्न क्यों बने बुढापा'

साध्वीश्री ने आजीवन इस गाथा की सार्थकता को बनाए रखा। 90वें वर्ष में व्यवहार बोध भी कंठस्थ किया। साध्वीश्री ने अपनी यात्राओं में सैकडों–सैकडों लोगों को प्रेरणा देकर सुलभ बोधि बनाया। कई दीक्षार्थी भी तैयार किए। जहां भी पधारते, संघीय संस्कारों के बीज वपन करते। गुरु भक्ति व आस्था पर विशेष जोर देकर सैकडों नए लोगों को गुरु धारणा करवाई। जैन–जैनेतर सभी में अणुव्रत का प्रचार–प्रसार करना उनका मुख्य लक्ष्य रहा। कई लोगों को देव–गुरु और धर्म के मर्म को समझाकर सम्यक्त्वी बनाया। कई लोगों को संस्कारित कर कर्मणा जैन बनाया। विद्यालयों, कॉलेजों आदि में जाकर विद्यार्थियों को विद्यार्थी अणुव्रत के विषय में समझाकर हजारों संकल्प पत्र भरवाए। कई व्यक्तियों के जीवन की दिशा बदल दी।

वर्धमान श्रद्धा

सिसोदा (मेवाड़) में छ भाइयों का एक बड़ा परिवार था। एक बार उनमें आपस में विवाद हो गया। स्थिति जटिल व आवेशपूर्ण बन गई। विकट परिस्थिति को देखकर परिवार की महिलाएं आतंकित हो गई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री के पास आ कर बोली– महाराज! आप शीघ्र हमारे घर पर पधारो, परिवार में विवाद बहुत उग्र हो गया है, कुछ अनहोनी न हो जाए। साध्वीश्री ने जैसे ही यह बात सुनी, अपनी सहवर्ती साध्वियों के लेकर तत्काल वहां पहुंच गई। उन सभी से मधुरता से बात की। सभी को समझाया। साध्वीश्री के समझाने की कला से प्रभावित होकर परिवार में विग्रह–वातावरण शान्त हो गया। पारस्परिक सौहार्द की भावना जागृत हो गई।

एक बार आप पंजाब में विराज रही थी। साध्वियां गोचरी के लिए गई हुई थी। एक परिवार बहुत बैचेन हो रहा था। साध्वियों ने पूछा– क्या बात हो गई है? परिजनों ने रुआंसे शब्दों में कहा– महाराज! गजब हो गया है, हमारे परिवार पर संकट की घड़ी आ गई है। अभी–अभी थोड़ी देर पहिले एक व्यक्ति की किसी ने हत्या कर दी है। उसमें हमारे परिवार के सदस्य सोमनाथ को झूठा दोषी ठहरा कर पुलिस पकड़ कर ले गई है। महाराजजी! हम निर्दोष है, हमें संकट से उबारो। साध्वी श्री ने उन सभी को सांत्वना देते हुए फरमाया– भाई! घबराओ मत, तुम सभी 'ऊँ भिक्षु–जय भिक्षु' का जाप करो। प्रतिमाह शुक्ल त्रयोदशी को उपवास–एकासन करने का संकल्प करो। स्वामीजी के प्रताप से तुम्हारे पर आया हुआ गलत आरोप का संकट दूर हो जाएगा। प्रेरणा से परिजनों ने उसी समय स्वामीजी का जप शुरू कर दिया। जप निरन्तर चलता रहा। मर्डर के केस में शीघ्र जमानत भी नहीं होती पर स्वामीजी के जप का ऐसा चमत्कारी प्रभाव हुआ कि नौवें दिन सोमनाथ निर्दोष साबित होकर सकुशल अपने घर लौट आया। असल में मर्डर करने वाले व्यक्ति ने अपना गुनाह कबूल कर लिया और सोमनाथ रिहा हो गया। श्रद्धालु परिवार की श्रद्धा और ज्यादा दृढ़ हो गई और पूरा परिवार दिल्ली से आचार्यश्री तुलसी के चरणों में उपस्थित हुआ। श्रद्धा समर्पित करते हुए अपनी आपबीती सुनाई और बहुत कृतज्ञता ज्ञापित की।

हरियाणा का सिसाय नगर तेरापंथ का प्रमुख क्षेत्र रहा है। यहां विशेषकर जाट जाति के परिवार बहुत हैं। उनमें धर्म के प्रति अच्छी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रद्धा है। संवत् 2012 के सिसाय पावस काल में अन्य तपस्या के साथ पचरंगी की तपस्या भी हुई। वहां उतनी तपस्याएं होना आश्चर्य की बात थी। सिसाय के लोगों की धर्म परायणता एवं असाम्प्रदायिकता को देखकर पूज्य आचार्यश्री तुलसी कई बार फरमाया करते– मैं चाहता हूं, सिसाय एक ऐसा धार्मिक क्षेत्र बने जिसमें प्रत्येक जाति के व्यक्तियों में धार्मिक संस्कार बढे और वे लोग कर्मणा जैन बने।

मास्टर कबूलचन्द जैन जैसे दृढधर्मी श्रावक उसी भूमि में जन्मे थे। उन्होंने साधना की अमिट ज्योत जलाई थी। गणाधिपति के आदेश से उस चातुर्मास में मास्टरजी के सुपुत्र बलराज जैन ने साध्वी विनयश्रीजी को अंग्रेजी भाषा का अध्ययन करवाया। यह आपकी प्रेरणा का ही प्रताप था।

श्रद्धा, समर्पण, संकल्प, श्रम एवं मनोबल की प्रतिमूर्ति

जीवन के अंतिम समय तक श्रद्धा एवं समर्पण के प्रति जागरूक रहना साध्वीश्री के श्रद्धाबल को इंगित करता है। गुरु एवं संघ के प्रति गहरी आस्था उनमें थी। गुरु वचनों को निभाने की भावना उनमें प्राण–प्रण से प्रबल रहती थी। संघीय विधान के प्रति जागरूक रहना उनका मुख्य ध्येय रहता था। विनय और श्रद्धा, रोम–रोम में बसी थी।

साध्वीश्री का संकल्प बल इतना मजबूत था कि जिस कार्य को करने का चिन्तन अपने मन में कर लेती, उसे पूरा करके ही छोड़ती। आगम और संघीय साहित्य पढने में उनकी विशेष रूचि रहती थी। आदि से अंत तक वाचन करने का आपका सहज स्वभाव था। इतनी उम्र में भी स्वाध्याय में इतनी तल्लीन हो जाती कि समय का पता ही नहीं चलता। 92 वर्ष की उम्र में उत्तराध्ययन सूत्र का सैकडों बार वाचन–स्वाध्याय किया। उनका अटल विश्वास था कि जितना आगमों का गहन अध्ययन किया जाता है, साधक की साधना उतनी ही गहरी होती जाती है। आगम का अध्ययन अध्यात्म को पुष्ट कर अन्तर्भावना और बाह्य आभामंडल को पवित्र बना देता है। साध्वीश्री ने अपने जीवन काल में उत्तराध्ययन, दसवैकालिक, सूयगडो, ज्ञाताधर्मकथा, ठाणं, निशीथ, व्यवहारसूत्र, वृहत्कल्प, निरयावलिका, भगवती सूत्र आदि आगम ग्रंथों का कई बार स्वाध्याय किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रमपूर्वक जीवन जीना साध्वीश्री के जीवन की पहचान थी। उनका चिन्तन था कि शारीरिक शक्ति का जितना दोहन करते हैं, शक्ति का उतना ही वर्धन होता है। संघीय प्रचार–प्रसार में अच्छी रूचि रहने से वे सदैव श्रमशील बनी रहती थी। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के कार्यों में अन्तिम समय तक यायावर बनी रही। उन्हें अपने दीर्घकालीन जीवन में कही एक जगह ठहराव नहीं करना पडा। समाधिमरण के एक सप्ताह पूर्व स्वयं केश–लुंचन करवाया एवं सहवर्ती साध्वियों का लोच भी अपने हाथों से तन्मयता से किया।

सिलाई करने में साध्वीश्री सिद्धहस्त थी। उनको सदैव स्वावलंबन पसन्द था। परवशता कतई स्वीकार नहीं थी। अंतिम दिनों तक अपने वस्त्रों की सिलाई स्वयं करती थी।

साध्वीश्री का मनोबल इतना मजबूत था कि शारीरिक अस्वस्थता होने पर भी कभी घबराई नही। कभी हीन भावना को स्वीकार नहीं किया। शारीरिक वेदना का जब कभी प्रभाव हुआ, उस स्थिति को समभावों से सहन कर निर्जरा धर्म का उपार्जन किया। हम सभी साध्वियों ने यह महसूस किया कि अन्तिम समय में मरणान्तक घोर वेदना होने पर भी समताभाव से कायोत्सर्ग की मुद्रा में शरीर को निश्चेष्ट कर दीर्घ कायोत्सर्ग को ग्रहण कर शरीर का विसर्जन कर दिया।

मनोबल के साथ साध्वीश्री का कायाबल भी इतना सुगठित था कि 92 वर्षों की अवस्था तक यात्राएं करती रही। धर्मसंघ की प्रभावना बढाती रहीं। 93वें वर्ष में प्रवेश के बाद भी उनकी समस्त इन्द्रियां सक्षम थी। शायद इसका राज यही था कि पाचन तंत्र अंत तक स्वस्थ रहा। दवा से प्रायः परहेज रहा। आजीवन किसी विशेष रोग से ग्रसित नहीं हुई। सात्विक दिनचर्या की वजह से अन्तिम अवस्था तक स्वस्थ जीवन उन्होंने पाया। सहवर्ती साध्वियों की स्वस्थता का भी उन्होंने पूरा ध्यान रखा। अंतिम दिन से एक दिन पूर्व साध्वी विनयश्रीजी को अजवायन कूट कर अपने हाथों से दी। इस तरह सभी सहवर्ती साध्वियों का पूरा ध्यान रखती थी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वचनबल (वाक्शक्ति) साध्वीश्री की बड़ी ओजस्वी थी। इतनी अवस्था में भी भाषा शुद्ध, स्पष्ट और मधुर थी। उनका मानना था कि कोई भी बात साफ सुथरी और भली हो, कड़वी और कठोर न होकर मिश्री की डली हो। वे अच्छी गायिका थी। जब भी वे अपने मधुर कंठों से रामायण, व्याख्यान आदि में संगान करती, श्रोता बहुत प्रभावित होते। आत्मशुद्धि के लिए प्रतिक्रमण भी ऊंचे व स्पष्ट स्वरों में उच्चारण करना उनको अभीष्ट था। समाधि मरण से लगभग 25 मिनट पहले तक आप स्वयं प्रतिक्रमण कर रही थी।

जीवन का अन्तिम चातुर्मास

सन् 2005 जाखल में चातुर्मास सम्पन्न कर शेषकाल में आप बुढ़लाड़ा (पंजाब) पधारी। वहां के लोगों की भक्ति भावना को देखकर साध्वीश्री ने अपने श्रम से क्षेत्र को तैयार किया, चातुर्मास के लिए योग्य बना दिया। वहां कई वर्षों से चातुर्मास नहीं हो रहा था। वजह थी– स्थान छोटा था। धूरी मर्यादा महोत्सव पर जब साध्वीश्री ने पूज्यवर के दर्शन किए तब आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से उन्होंने निवेदन किया– गुरुदेव! बुढ़लाड़ा अच्छा क्षेत्र है। वहां चातुर्मास करवाया जा सकता है। युवाचार्य महाश्रमणजी ने फरमाया कि आपने कभी वहां चातुर्मास किया है?जगह छोटी है। तब आपने पुनः निवेदन किया– स्वामीजी ने छोटी–सी अंधेरी ओरी में चातुर्मास किया था। उस की अपेक्षा वहां जगह छोटी नहीं है। अभी शेषकाल में वहां रहकर आई हूं। अच्छा क्षेत्र है, वहां के लोगों में श्रद्धा अच्छी है। उसी दिन आचार्य प्रवर कार्यक्रम में पंडाल में पधारे। चातुर्मासों की घोषणा करते हुए साध्वीश्री का उस वर्ष यानी सन् 2006 का चातुर्मास बुढ़लाड़ा फरमा दिया। बुढ़लाड़ा वासियों को जब चातुर्मास की घोषणा का पता चला तो बहुत प्रसन्नता हुई

पूज्यवर के निर्देशानुसार चातुर्मास के समय साध्वीश्री ने अपने सहवर्ती साध्वियों सहित बुढ़लाड़ा पावस प्रवास के लिए पधारी। कई वर्षों से बुढ़लाड़ा वासियों को चातुर्मास करवाने की भावना थी। इस वर्ष उन की भावना फलित हुई। वहां के श्रावक समाज ने बहुत उत्साह एवं उमंग के साथ साध्वीश्री का स्वागत किया। साध्वीश्री में भी नए क्षेत्र में चातुर्मास करने का नया जोश था।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चातुर्मास में साध्वीश्री की प्रेरणा और श्रम से त्याग, प्रत्याख्यान, जप–तप आदि धार्मिक उपक्रमों की गंगा प्रवाहित हुई। काफी संख्या में गुरुधारणा करवाई गई। कई नए परिवार श्रद्धालु बन हमारे धर्म संघ के साथ जुड़े। विद्यालयों में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान का अच्छा प्रसार–प्रचार हुआ। गुरुदेव की कृपा एवं साध्वी श्री के कठोर श्रम से चातुर्मास काल में कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। धर्मप्रभावना बहुत अच्छी रही। यह नया चातुर्मास वहां के श्रावक समाज के लिए यादगार चातुर्मास बन गया। जहां चातुर्मास की सफलता के लिए साध्वीश्री ने पूरा श्रम किया, वहीं कई मुखवस्त्रिकाओं का निर्माण भी उनके सिद्धहस्तों ने किया। अपनी स्वाध्यायमयी साधना को अनवरत चालू रखकर जहां लोक कल्याणकारी कार्य किए, वहीं धर्म संघ की प्रभावना को भी बहुत अवसर मिला। अंतिम क्षणों तक श्रम करने का यह अनूठा उदाहरण रहा। साध्वीश्री की प्रेरणा बुढ़लाड़ा वासियों के लिए दीर्घकालीन व्यवस्था बन गई। चातुर्मास की सफलता को लेकर बुढ़लाड़ा वासी भिवानी पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ संघरूप में उपस्थित हुए। पूज्यवर से निवेदन किया– गुरुदेव! आपने महती कृपा कर इस वर्ष साध्वी कंचनकुमारीजी का चातुर्मास फरमाया। हम आपके बहुत बहुत आभारी हैं। साध्वीश्री ने वहां बहुत श्रम किया है। वहां जनता को जागृत कर दिया है। हम तो इस चातुर्मास से निहाल हो गए हैं। ग्राम में धर्म प्रभावना बहुत अच्छी हुई है। सभी साध्वियों के सुख साता है। आप कृपा कर साध्वीश्री के लिए कुछ आशीर्वचन फरमाएं। पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने साध्वी श्री के कार्यों की सराहना करते हुए मंगल संदेश फरमाया–

अर्हम्

साध्वी कंचन कुमारी जी (राजनगर)!

इस वर्ष आपकी संघनिष्ठा, गुरुभक्ति, उत्साह एवं श्रमशीलता का परमपूज्य आचार्य प्रवर ने कई बार उल्लेख किया। हमारी साध्वियां कोई भी अच्छा कार्य करती है, उससे पूज्यवरों को बहुत प्रसन्नता होती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपकी सहयोगिनी साध्वियों का मनोबल भी ऊंचा है। बुढलाडा क्षेत्र में अच्छा कार्य हो रहा है। सब साध्वियां स्वस्थ एवं समाधिस्थ रहें। अपनी साधना के साथ धर्मशासन की प्रभावना करती रहे। यही मंगलभावना

16 सितम्बर 2006 साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
भिवानी

साध्वीश्री का यह अंतिम चातुर्मास बुढ़लाड़ा में था। चातुर्मास समाप्ति के बाद आचार्य प्रवर का दिशा निर्देश मिला कि आपको टोहाना और उकलाना आदि क्षेत्रों का स्पर्श करना है। अतः चातुर्मास परिसम्पन्न कर गुरु इंगित के अनुरूप वे टोहाना पधार गई। दिसम्बर–जनवरी की भयंकर सर्दी, ठिठुरती रातें, उनमें विहार करना कठिन होता है फिर भी कल्पनीय दो महिनें रहने के बाद उनकी भावना थी कि गुरु इंगितानुसार उकलाणा क्षेत्र परसना है। अतः ऐसी सर्दी में भी विहार करने का निश्चय कर लिया। वहां के श्रावकों ने आपके निर्णय को सुनकर निवेदन किया– साध्वीश्रीजी! ऐसी भयंकर सर्दी में हम आपको विहार नहीं करने देंगे। साध्वीश्री गुरु निर्देशों की अनुपालना के लिए तैयार हो गई और विहार का दिन निश्चित कर दिया। इतनी प्रबल भावना होने पर भी नियति का ऐसा योग बना कि वहां से विहार नहीं हो सकता। यह आपका अन्तिम प्रवास बन गया।

जीवन का अंतिम शेषकाल प्रवास–

शेषकालीन प्रवास में टोहाना में भी कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। यथा–

1. त्रिदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर। इसमें 45 बालक–बालिकाओं ने भाग लिया।
2. एक दिवसीय महिलाओं के शिविर में 31 बहिनें संभागी बनी।
3. आचार्य महाप्रज्ञ दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में महाप्रज्ञ प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम प्रश्नमंच के रूप में था। 15 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. पौष कृष्णा दशमी, भगवान पार्श्वनाथ जयन्ति के उपलक्ष्य में सवा लाख का सामूहिक जप अनुष्ठान, जिसमें 75 भाई–बहिनों ने भाग लिया। 31 बहिनों ने एक साथ एकासन तप किया।
5. भ्रूण हत्या निवारण अभियान के तहत टोहाना तेरापंथ महिला मंडल के सहयोग से 121 फार्म भरवाए।
6. सन् 2006 पौष कृष्णा 12 को साध्वीश्री ने 93वें वर्ष में प्रवेश किया। इस अवसर पर परम श्रद्धेय युवाचार्यवर एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी के संदेश प्राप्त हुए–

'अर्हम्'

साध्वी कंचन कुमारीजी (राजनगर) एक वयोवृद्ध साध्वी हैं। इनका सिंघाडा एक प्रशस्त सिंघाडा प्रतीत हुआ। इस अवस्था में कंचन कुमारीजी संभवतः एक सक्रिय साध्वी हैं। वे खूब आध्यात्मिक साधना करती रहे, स्वास्थ्य का ध्यान रखे। मंगल कामना

02.11.2006 युवाचार्य महाश्रमण
भिवानी

'अर्हम्'

आप अपनी जिन्दगी के सफरनामे के 92वर्ष पूरे कर 93वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं। इतनी लम्बी जीवन यात्रा एवं संयम यात्रा भी सौभाग्य का सूचक है। जीवन के दसवें दशक में भी आपका उत्साह व स्फुरणा प्रशस्त है। अब चेतना के ऊर्ध्वारोहण अथवा अन्तर्मुखता की यात्रा पर विशेष ध्यान दें। जीवन का हर पल समता की साधना में व्यतीत हो। चित्त समाधि की निरन्तरता रहे। जप, ध्यान, स्वाध्याय व अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें। आपकी आगामी जीवन यात्रा मंगलमय हो। यही मंगल कामना है।

भिवानी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
02.11.2006

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6 मार्च 2007, चैत्र शुक्ला चतुर्दशी के दिन साध्वीश्री ने हाजरी का वाचन किया। 93 वर्षीय साध्वी श्री की ओजस्वी वाणी सुनकर टोहाना वासी अत्यंत प्रभावित हुए। हाजरी वाचन में आज्ञा, मर्यादा, अनुशासन व समर्पण पर विशेष बल दिया गया। उपस्थित भाई–बहनों ने कहा– आज साध्वीश्री को बडा जोश आ रहा है। यद्यपि आपके दांत नहीं थे किन्तु आवाज बिल्कुल स्पष्ट थी। उस उम्र में ऐसी शुद्धवाणी से उच्चारण अनुकरणीय था।

मेरा नाम नहीं

8 मार्च 2007 को साध्वी पावनप्रभाजी गोचरी की झोली पर साध्वीश्री कंचनकुमारीजी का नाम लिख रही थी। तत्काल साध्वीश्री ने फरमाया– मेरा नाम मत लिखो। एक नई पात्री का जब निर्माण किया जा रहा था, तब भी उन्होंने कई बार कहा– नई पात्री क्यों बनाती हो? मेरे नेश्राय की पात्री काम आएगी। ऐसा लगता है, उन्हें अज्ञात में कुछ पूर्वाभास हो रहा था। हमने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। अनुभव हो रहा था कि अन्तिम समय में उनकी हर पदार्थ के प्रति विरक्ति के भाव बढ रहे थे। अनासक्त भाव पुष्ट हो रहे थे। उन्हें संग्रहवृत्ति बिलकुल पसन्द नहीं थी। सहवर्ती साध्वियों को भी इस संबंध में प्रेरणा देती रहती।

ऋजुमना साध्वी

गौतम स्वामी ने महावीर से पूछा–आलोयणाए णं भन्ते! किं जणयइ'? भन्ते! आलोचना से जीव क्या प्राप्त करता है? भगवान ने कहा– आलोचना से वह अनन्त संसार को बढाने वाले माया निदान तथा मिथ्यादर्शनशल्य को निकाल फेंकता है और ऋजु भाव को प्राप्त करता है। साध्वी कंचन कुमारीजी भी शान्त, सौम्य और ऋजुमना साध्वी थी। समाधि मरण से एक दिन पूर्व 10 मार्च 2007 को सहवर्ती साध्वियां आराधना के गीतों का स्वाध्याय संगान के रूप में कर रही थी। जहां 'मिच्छामि दुक्कड़ं' का उच्चारण आता, वे उच्च स्वर में 'मिच्छामि दुक्कड़ं' का उच्चारण करती एवं सभी से कहती– यह शब्द जोर से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बोला करो। इस प्रकार अलोयणा करके निर्मल व पवित्र बनकर आगे की राहें प्रशस्त कर ली। आत्मालोचना की गंगा में अभिस्नात होकर उन्होंने आराधक पद की आराधना की।

अंतिम क्षणों तक जागरूकता

11 मार्च 2007, चैत्र कृष्णा सप्तमी, इसे जन भाषा में शीतला सप्तमी कहते हैं। यह त्यौहार साध्वीश्री की जीवन यात्रा के समापन का दिन, अंतिम विदाई का दिन बन गया।

वे सदैव की भांति नियमित दिनचर्या संपन्न कर सांयकालीन प्रतिक्रमण स्वयं ही कर रही थी। प्रतिक्रमण करते–करते ही साध्वी प्रावन प्रभा से कहा– तुम मुझे भी प्रतिक्रमण सुना दो। पास ही बैठी साध्वी विनयश्री ने पूछा– क्या बात है?आपकी तबियत ठीक नहीं है क्या?

साध्वीश्री ने मनोबल रखते हुए कहा– तबियत तो ठीक है परन्तु वायु बढ गई है। सांस भारी हो रहा है। कुछ देर में कफ आने की संभावना हुई। साध्वीश्री ने अपने हाथों समाधिपात्र को लिया और कफ निकाल दिया। हमें ऐसा लगा कि अब आराम मिल जाएगा। उन्होंने फरमाया– तुम चिन्ता मत करो। स्वामीजी के प्रताप से सब ठीक हो जाएगा। परंतु देखते ही देखते श्वास का वेग तीव्र होने लगा। साध्वी विनयश्री जी ने नब्ज देखी। नब्ज ठहर–ठहर कर चल रही थी। स्थिति की गंभीरता देखते हुए निवेदन किया– संथारा करवा देंवे क्या?साध्वीश्री ने स्वीकार की भाषा में उत्तर दिया– हां पचखा दो। साध्वीजी ने जागरूकता पूर्वक पांच महाव्रतों की आलोयणा करवाई। उन्होंने पूर्ण सजगता से अपने पूर्ण जीवन की आलोयण की। साध्वियों ने तुरंत टोहाना सभा के मंत्री श्री– सुभाषजी जैन को याद किया, वे तुरन्त आए और पूज्यवरों को स्थिति अवगत कराने का निर्णय लेकर फोन द्वारा गुरुदेव को स्थिति प्रेषित कर दी। श्री रतनलालजी चोपड़ा उस समय गुरुदेव की सेवा में ही उपस्थित थे। अतः शीघ्र ही पूज्यवरों का संदेश प्राप्त हो गया, जो इस प्रकार है–

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

'अर्हम्'

साध्वी कंचन कुमारीजी आत्मा में लीन रहे, परिणाम अच्छे रखें, शरीर की चिन्ता न करें। आगे का कल्याण करना है। तत्रस्थ साध्वियां उन्हें त्याग–प्रत्याख्यान और आलोयणा करवावें।

आचार्य महाप्रज्ञ
11 मार्च 2007

जैसे ही पूज्यवरों का संदेश प्राप्त हुआ, साध्वीश्री को संदेश वाचन कर सुनाया। संदेश को सुनकर ऐसा लग रहा था कि आपने संदेश को आत्मसात कर लिया है। 'आत्मा भिन्न–शरीर भिन्न' के भेद विज्ञान से आत्म समाधि में लीन बन गई। अन्तिम क्षणों में कोई वेदना नहीं। समभाव में रहते हुए अपनी नश्वर काया का विसर्जन कर दिया। आत्म कल्याण कर अपनी जीवन यात्रा का जागरूकता पूर्वक समापन कर लिया।

मृत्यु महोत्सव बन गई

साध्वी कंचन कुमारीजी का 11 मार्च सन् 2007, शीतला सप्तमी के दिन सायं 7.41 मिनट पर लगभग 20 मिनट के चौविहारी अनशन में देवलोक गमन हो गया। सभा के पदाधिकारियों ने तत्परता दिखाते हुए पंजाब और हरियाणा के सभी क्षेत्रों में देवलोक गमन के समाचार प्रेषित कर दिए। मौसम काफी प्रतिकूल हो गया। बरसात के साथ शीतलहर चालू हो गई। श्रावक समाज में चिन्ता हो गई– ऐसे मौसम में अन्तिम संस्कार कैसे होगा?

रात्रि में ही श्रद्धालुओं के आने का क्रम चालू हो गया। 12 मार्च को अनेकों क्षेत्रों से श्रावक–श्राविकाएं अंतिम दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े। मौसम पुनः साफ हो गया। स्थानीय तेरापंथ भवन में एक भव्य बैकुण्ठी बनवाई और उसमें साध्वी कंचनकुमारीजी के पार्थिव शरीर को विराजमान करवा दिया। बैण्डबाजों, भजनों की स्वर लहरियों एवं जयनारों से गुंजायमान स्वरों के साथ अंतिमयात्रा प्रारंभ हुई। स्थानीय

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एवं बाहर से आए हुए जैन–जैनेतर हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। टोहाना का पूरा बाजार बंद रखा गया। सड़कें छोटी लगने लग गई। शवयात्रा शहर के मुख्य मार्गों एवं मुख्य बाजारों से होती हुई चूना रोड पर स्थित साध्वी लिछमांजी के समाधि स्थल के पास पहुंची । उस समय मौसम बिलकुल साफ होकर धूप निकल आई। उदयपुर से आए हुए पारिवारिकजनों में स्व. श्री शान्तिलालजी के सुपुत्र श्री नरेन्द्रजी कोठारी आदि ने साध्वी श्री के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि देकर अन्तिम संस्कार की रस्म पूरी की। अन्तिम संस्कार का कार्य पूर्ण होने के पश्चात पुनः बरसात शुरू हो गई। वहां उपस्थित सभी लोगों को आश्चर्य हुआ कि यह तो सचमुच में एक चमत्कार सा हो गया। इतनी तेज बरसात का होना, अचानक रूक जाना, संस्कार कार्य पूरा होने के बाद फिर चालू हो जाना। यह सभी साध्वीश्री के पुण्योदय से ही हुआ। धर्म की प्रभावना का भी यह सार्थक प्रसंग रहा।

पूरा पंजाब व हरियाणा का श्रावक समाज साध्वीश्री के शान्त स्वभाव, सरलता और सौम्यता पर श्रद्धानत थे। साध्वी कंचन कुमारीजी के देवलोक गमन के समाचार जब आचार्य प्रवर को ज्ञात हुए, पूज्य प्रवरों ने कृपा कर मंगल संदेश भिजवाए।

'अर्हम्'

साध्वी कंचन कुमारीजी (राजनगर) का स्वर्गवास हो गया। ये गुण सम्पन्न साध्वी थी। उनकी सहवर्ती साध्वियां प्रसन्नचित्त रहे। अब साध्वी विनयश्रीजी अग्रणी का दायित्व सम्भाले। सभी साध्वियां खूब अच्छा काम करती हुई धर्म संघ की प्रभावना करती रहे। मंगलकामना।

आचार्यश्री की आज्ञा से युवाचार्य महाश्रमण

छोटी खाटू

13.03.2007

टोहाना में स्मृति सभा–

14 मार्च 2007, टोहाना के तेरापंथ भवन में नवनियुक्त अग्रगण्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी विनयश्री (बोरावड़) के सान्निध्य में साध्वी कंचनकुमारी जी की स्मृति सभा में श्रद्धांजलि का आयोजन किया गया। इसमें नगर के गणमान्य व्यक्तियों तथा सभी स्थानीय सभा–संस्थाओं (तेरापंथ सभा, स्थानकवासी समाज, मूर्तिपूजक समाज एवं सनातन समाज के प्रमुख व्यक्तियों ने सहभागिता देकर साध्वी श्री के प्रति अपने श्रद्धा सुमन प्रस्तुत किए। सभी ने उनकी विशेषताओं का वर्णन करते हुए उनकी मिलनसारिता, सरलता एवं कार्य कुशलता के प्रति श्रद्धा अर्पित की।

स्मृति सभा में बोलते हुए साध्वी विनयश्री ने कहा कि अब तक कार्यक्रम हम उनकी सन्निधि में मनाया करते थे। आज के इस कार्यक्रम में वो हमारे मध्य साक्षात् उपस्थित नहीं है। उनकी रिक्तता की अनुभूति बराबर रहेगी। अचानक उनका प्रयाण कर जाना बहुत अखर रहा है। पर नियती के आगे किसी का जोर नहीं चलता। साध्वी कंचन कुमारीजी हमारी अग्रणीय साध्वी थी। वे अंतिम समय तक कार्यशील, श्रमशील, श्रद्धाशील और जागरूक रही तथा हमें भी सदा जागृति की प्रेरणा देती रही। कितने आश्चर्य की बात है कि उम्र के दशवें दशक में भी उन्होंने हम सभी सहवर्तियों से अपने निजी कार्य के लिए कभी सहयोग नहीं लिया। एकाएक अपनी निर्जरा अन्य किसी को वे देना नहीं चाहती थी। कोई साध्वी रूग्ण हो जाती तो स्वयं उन्हें अपनी सेवा देने के लिए तत्पर रहती थी। वे एक गुण सम्पन्न विलक्षण व्यक्तित्व की धनी थी जो सदैव हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी। साध्वी सोहनाजी ने स्मृति करते हुए कहा–मेरा सौभाग्य है कि 65 वर्षों तक मुझे उनके साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके जीवन की विशेषताओं का किन शब्दों में वर्णन करूं?वे बड़ी अनुभवी एवं सहवर्ती को परोटने की कला में दक्ष थी। उनकी सहजता और सरलता को देखकर अनेक व्यक्ति प्रभावित हो जाते थे। साध्वी पावन प्रभा ने अपनी अग्रगण्य के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करते हुए कहा– हमने प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि साध्वीश्री जी की 93वें वर्ष में प्रवेश के बाद भी इन्द्रिय शक्ति प्रवर्धमान रही। उनकी जागरूकता व सक्रियता ने सैकडों–सैकडों लोगों के दिलों में अच्छी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छाप छोड़ी है। कई लोगों ने कई बार कहा कि लम्बी उम्र में भी आपका बैठने का, उठने का, शयन आदि क्रियाओं का व्यवस्थित तरीका है। वे कभी दीवार का सहारा लेकर नहीं बैठते थे। इस प्रकार वे शम, सम और श्रम की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी। साध्वी आत्मयशा ने अपने भावों को प्रगट करते हुए सभा को सम्बोधित किया कि मैं अपना सौभाग्य मानती हूं कि मुझे उनकी सुखद सन्निधि में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। सन् 2004 में सिरियारी में गुरुदेव महाप्रज्ञजी के कर कमलों से मेरी दीक्षा हुई। उसके 4 महीनों के बाद पूज्यवर ने मुझे उनकी सन्निधि में भेज दिया। मुझे अफसोस है कि मात्र दो वर्ष तक ही मैं उनके साथ रह सकी।

गुरु सन्निधी में स्मृति सभा

टोहनावासियों ने संघ रूप में अहिंसा यात्रा के द्वितीय चरण में नागौर (राजस्थान) जिले के मांझी गांव में आचार्यश्री के दर्शन किए। प्रातः कालीन कार्यक्रम के अंत में पूज्यवर के समक्ष टोहना के श्रद्धाशील कार्यकर्त्ता श्री सुशील जैन ने साध्वी श्री के अन्तिम संस्मरणों को लेकर अपने विचार रखे तथा टोहाना के युवकों ने एक स्मृति गीत प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय युवाचार्य श्री महाश्रमणजी ने उनकी स्मृति करते हुए फरमाया–साध्वी कंचनकुमारीजी हमारे धर्मसंघ की वयोवृद्ध और संयमवृद्ध साध्वी थी। उन्होंने कालूगणी के युग में दीक्षा प्राप्त की। अग्रगणी के रूप में उनका संथारा पूर्वक स्वर्गवास हो गया। उनके प्रति हमारी प्रमोद भावना है।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने फरमाया– तेरापंथ धर्म संघ सामुदायिक चेतना का धर्मसंघ है। यहां एक आचार्य का नेतृत्व, एक समाचारी और सम आचार–विचार की परम्परा है। यहां सामुदायिक चेतना को पनपने का मौका मिलता है। सब समर्पण के साथ दीक्षित होते हैं और समर्पण के साथ कार्य करते हैं। जाते हैं तो ऐसा लगता है संघ का सदस्य विदा हो गया। साध्वी कंचनकुमारीजी को बहुत समय से जानता हूं। उनमें शासन भक्ति थी। धर्मसंघ और आचार्य के प्रति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समर्पित साध्वी थी। उनमें मनोबल भी बहुत था। पंजाब में अच्छा काम किया। अन्तिम समय तक स्वावलंबी रहीं। अन्तिम समय में अनशन भी आ गया। मृत्यु भी सहेली बनकर आई और ले गई।

श्रम की पूजा से बना स्वावलंबी व्यवहार।
साध्वी कंचन भाान्तिमय मृत्यु बनी उपहार।।

(विज्ञप्ति 25 से 31 मार्च 2007 के अनुसार)

इस तरह संयमी जीवन की लम्बी यात्रा को पूर्ण कर साध्वीश्री ने अपने वर्तमान को सफल बनाया। भविष्य को उजला बनाने का पाथेय साथ में लेकर विदा हो गई। महाप्रयाण कर गई। हम सभी उनके प्रति श्रद्धानत हैं।

पूज्यवरों से प्राप्त विशेष संदेश

।।अर्हम्।।

आदरास्पद साध्वीश्री कंचनकुमारी!

सादर वन्दना व सुखपृच्छा।

तेरापंथ धर्मसंघ जैसे विकासशील और अनुशासननिष्ठ धर्मसंघ में दीक्षित होकर हम अपने सौभाग्य की जितनी सराहना करें, कम है। परमाराध्य गणाधिपति गुरुदेव और श्रद्धेय आचार्यवर की कुशल अनुशासना में सबकी साधना चल रही है। पूरा धर्म परिवार निश्चिन्त और सानन्द है। मर्यादा–महोत्सव पर शारीरिक दृष्टि से ही आपको नहीं बुलाया गया। केन्द्र के सारे संवाद उधर आने वाली साध्वियों से सुनें।

साध्वी ज्ञानाजी, सोहनांजी, विनयश्रीजी, पावनप्रभाजी से यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा। साधना और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। साध्वी विनयश्रीजी स्वास्थ्य की अनुप्रेक्षा कर शरीर को ठीक करें। ईडवा अच्छा क्षेत्र है। वहां भाई–बहिनों को प्रेरणा देकर श्रावक संबोध सिखाएं, स्वयं भी सीखें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।।अर्हम्।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारीजी,

सादर वंदना व सुखसाता। वृद्धावस्था व अस्वस्थता के कारण आप कई वर्षों से ईडवा में प्रवास कर रही हैं। इस वर्ष साध्वीश्री ज्ञानाजी असाध्य वेदना के बाद दिवंगत हो गईं, यह उनकी भाग्यवत्ता का प्रतीक है। साध्वीश्री सोहनांजी, विनयश्रीजी, पावनप्रभाजी ने बहुत सेवा की। सभी साध्वियों से वन्दना व सुखसाता पूछना। गंगाशहर का मर्यादा–महोत्सव शक्तिपीठ पर सानन्द सम्पन्न हुआ। महोत्सव के सारे संवाद उधर आने वाली साध्वियों से सुनें। यहां सब सानन्द हैं। आप सबकी साधना व स्वास्थ्य के लिए मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

।।अर्हम्।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारीजी आदि साध्वियां!

कायोत्सर्ग में भेद–विज्ञान का अभ्यास, आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है– इसका बार–बार अनुचिंतन। चित्तसमाधि और मानसिक प्रसन्नता का विशेष प्रयोग। आत्म–निरीक्षण का अभ्यास प्रतिदिन चले। विनम्रता, सहिष्णुता का विकास व ध्यान का विशेष अभ्यास करें।

युवाचार्य महाप्रज्ञ
विक्रम संवत् 2046, चैत्र 4, लाडनूं

।।अर्हम्।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारीजी,

आचारनिष्ठा, शाासन के प्रति समर्पण, पारस्परिक सौहार्द, व्यवहार की कुशलता– ये चित्त समाधि के अमोघ उपाय हैं। आत्म–निरीक्षण, कषाय का उपशमन हो, वैसा चिंतन साधना के लिए आवश्यक है।

आत्म–विकास की भावना निरन्तर बढती रहे।

आचार्य महाप्रज्ञ
विक्रम संवत् 2053, वैशाख शुक्ला 2, लाडनूं
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।।अर्हम्।।

अपने आपको देखना एक आश्चर्य है। सुबह से शाम तक दूसरों को देखनेवाला आदमी यदि अपने आपको देखता है तो क्या यह आश्चर्य नहीं होगा?पूरा समाज दूसरों को देखते–देखते अज्ञान का जीवन जीने लगा है। ज्ञानी के लिए जरूरत है–अपने आपको देखने की। यह प्रयत्न मंगल और कल्याणकारी है। मैं आशा करता हूं कि यह पूरी निष्ठा के साथ चलेगा।

युवाचार्य महाप्रज्ञ
25.08.80
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

।।अर्हम्।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी (राजनगर),

वेदना यह परीक्षण करने के लिए आती है कि व्यक्ति में सहनशीलता कितनी है। आपकी सहनशीलता, समता, जागरूकता बढती रहे। अभी बीमारी की अवस्था में आपने जिस सहिष्णुता का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है।

महाश्रमण मुदित
21.03.90

।।अर्हम्।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी (राजनगर),

वृद्धावस्था में भी आपका मनोबल मजबूत है। आस्थाबल और संकल्प के सहारे आपने इस उम्र में भी कुल्हे की हड्डी जोड़ ली। अब आप आगम, स्वाध्याय पर विशेष ध्यान दें। आगम में एक–एक वाक्य की अनुप्रेक्षा करें। सीओसिणच्चाई से णिग्गंथे–निर्ग्रन्थ वह होता है, जो शीत और उष्ण अर्थात अनुकूलता और प्रतिकूलता को सहन करता है, उनमें संतुलित रहता है। इस प्रकार के सूत्रों का आलम्बन लेकर साधना में आगे बढें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
05.04.96

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।।अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी (राजनगर) आदि सभी साध्वियां,

सभी चित्तसमाधि व स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पारस्परिक सौहार्द, आचारनिष्ठा व श्रमशीलता सफलता के सूत्र हैं। जप का प्रयोग चलता रहे। खूब काम करावें। वैरागी बनाने का यथासंभव प्रयास करें।

महाश्रमण मुदित
06.04.96

।।अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारीजी (राजनगर),

सादर वन्दना व सुखपृच्छा।

नोखा में मर्यादा–महोत्सव का आयोजन। सैकडों साधु–साध्वियों की उपस्थिति। आप जैसी कुछ साध्वियां शारीरिक अक्षमता के कारण यहां नहीं पहुंच पाई, पर मन से संभवतः सबकी उपस्थिति यहीं रही। स्थूल रूप में यहां के सारे संवाद आप उधर आनेवाली साध्वियों से सुनें। हमारी आचारनिष्ठा, संघनिष्ठा, आचार्यनिष्ठा, श्रमनिष्ठा और सौहार्दनिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती रहे, यह लक्ष्य सदा सामने रखना है।

ईडवा अच्छा क्षेत्र है, श्रावक समाज में श्रद्धा के भाव हैं। श्रद्धा सदा जीवन्त रहे, इसलिए तेरापंथ के तत्त्वदर्शन और इतिहास की जानकारी कराते रहना है। ज्ञानमयी श्रद्धा व्यक्ति के आचरण को उदात्त बनाती रहती है। हमें अपने श्रावक समाज की धार्मिक चेतना को निरन्तर जगाते रहना है।

समस्त साध्वियों से वंदना व सुखपृच्छा। छोटी साध्वी पावनप्रभाजी अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए पुरुषार्थ करती रहें। सबकी चित्तसमाधि के लिए मंगल भावना।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
14–3–98, लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी (राजनगर) आदि साध्वियां ईडवा में प्रवासित हैं। निकट होते हुए भी वे लाडनूं नहीं पहुँच सकीं। विहार की अशक्तता ने बाधा बना रखी है। क्षेत्रीय दूरी होने पर भी मन में आस्था व भक्ति का भाव है तो वह दूरी से भी गुरु के साथ व्यक्ति को जोड़ देता है। सभी साध्वियाँ स्वास्थ्य का ध्यान रखें। क्षेत्र को संभालती रहें, यथासंभव आगम स्वाध्याय करती रहें। मंगलभावना।

लाडनूं
11–4–1999

।। अर्हम् ।।

साध्वी कंचनकुमारजी (राजनगर),

सादर वन्दना व सुखपृच्छा।

हम सब साध्वियाँ यहाँ गुरुवरों की कृपा से सानन्द हैं। आपकी साधना और स्वास्थ्य मंगलमय होगा। वृद्धावस्था के कारण आपको एक प्रकार से स्थिरवासी बनना पड़ा हैं। फिर भी आत्मबल की दृष्टि से आप अपने आपको कभी कमजोर अनुभव नहीं करती, यह अच्छी बात है।

साध्वी श्री ज्ञानाजी, सोहनाजी, विजयश्री और पावनप्रभाजी से यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा।

ईडवा साताकारी क्षेत्र है, भाई–बहिनों में अच्छी धर्म–जागरण चलती रहे, ऐसा प्रयास करती रहें।

श्रावक–संबोध को सीखने की प्रेरणा दें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
17–2–99, लाडनूं

।। अर्हम् ।।

ईडवा से समागत श्रावकों से ज्ञात हुआ है कि साध्वी श्री कंचनकुमारी जी अस्वस्थ हैं। अस्वस्थता का क्या कारण बना?वृद्धावस्था और बीमारी दोनों एक साथ भारी पड़ जाती हैं। आप मनोबल रखें। साध्वियां सेवा कर रही हैं, साध्वी श्री की समाधि का

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विशेष ध्यान रखें। समुचित उपचार कराएँ। ध्यान, जप, कायोत्सर्ग आदि का प्रयोग कराएँ। स्वास्थ्य के लिए मंगलभावना।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
25–10–99, लाडनूं

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी अस्वस्थ हो गई। वृद्ध शरीर हैं, ऐसा सोचना चाहिए। सहज निर्जरा का अवसर आ गया। मानसिक प्रसन्नता रखें, चित्तसमाधि रखे। जप आदि का प्रयोग चले। सभी साध्वियां सजगता पूर्वक खूब अच्छा काम करें।

युवाचार्य महाश्रमण
5–11–99
अध्यात्म साधना केन्द्र, (नई दिल्ली)

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारी जी राजनगर ईडवा में प्रवास कर रही हैं। स्वाध्याय ध्यान का क्रम चलता रहे। सब साध्वियाँ चित्तसमाधि रखें। खूब अच्छा काम कराती रहें। यही मंगल कामना है।

युवाचार्य महाश्रमण
23–9–99 (मेहरोली)

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारी जी,

सादर वंदना व सुखपृच्छा।

आपके मन में गुरुदर्शन की गहरी तड़प हैं, पर क्षेत्रीय दूरी व वृद्धावस्था के कारण भावना पूरी नहीं हो पा रही है। तारानगर का महोत्सव आचार्यप्रवर के प्रताप से बहुत सफल रहा। उसके संवाद उधर आने वाली साध्वियों से सुनें। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य भी अनुकूल कम रहा। साध्वियाँ सेवा अच्छी कर रही हैं, प्रसन्नता। सब साध्वियों से यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
17–2–2000 (तारानगर)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी वृद्ध हैं, अस्वस्थ भी हैं। ज्ञात हुआ कि उनकी सहयोगिनी साध्वी विनयश्री को हार्ट की तकलीफ भी हुई है। इस कारण उनका घूमना–फिरना बंद है और भोजन भी विशेष नहीं चलता है। ऐसी स्थिति में कायोत्सर्ग ओर अनुप्रेक्षा का प्रयोग अधिक उपयोगी हो सकता है। संकल्पशक्ति बढ़ाएँ, मनोबल जुटाएँ, जप का प्रयोग करें। क्षेत्रीय दूरी है, चातुर्मास के बाद गुरुदर्शन की संभावना लगती है। साध्वी श्री सोहनाजी और पावनप्रभाजी उत्साह के साथ कार्य कर रही हैं, साधुवाद। स्वास्थ्य के लिए मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
25–4–2001

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारी जी, सोहनाजी, विनयश्रीजी, पावनप्रभाजी!

यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा।

आप ईडवा से डेगाना आएँ। साध्वी श्री विनयश्री जी की अस्वस्थता के कारण पहुंचने में कठिनाई हो। इस स्थिति में श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने साध्वी स्वर्णरेखाजी को निर्देश किया है कि वे ईडवा पहुंचने में आपका सहयोग करें। यह संघ की महिमा है। हमें ऐसा धर्मसंघ मिला है कि हमारे गुरु दूर बैठे भी सबकी चिन्ता करते हैं। सब साध्वियां साधना और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। केन्द्र के संवाद साध्वियों से जानें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
9–6–2001, राजलदेसर

।। अर्हम ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारी (राजनगर) आदि साध्वीवृन्द! सुखपृच्छा।

सभी साध्वियाँ चित्तसमाधि में रहें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी स्वर्णरेखाजी आपको ईडवा पहुँचा सकेंगे। हम यहाँ सन्निधि में साधना संलग्न हैं।

युवाचार्य महाश्रमण
राजलेदसर

।। अर्हम् ।।

ईडवा में साध्वी श्री कंचनकुमारी राजनगर प्रवास कर रही हैं। साध्वी श्री वयोवृद्ध हैं। साध्वी सोहनांजी भी 70 पार हैं। साध्वी विनयश्री भी अस्वस्थ हो गई हैं। साध्वी सोहनांजी, पावनप्रभाजी सबकी सेवा कर रही हैं। उनको सब साध्वियों का वात्सल्य मिल रहा है। सेवा, समर्पण, विनय, वात्सल्य आदि तत्त्व हमारे संघ में प्रभावना के कारक हैं। सब साध्वियाँ प्रसन्न और स्वस्थ रहे।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
8—9—2001

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी (राजनगर)

स्वाध्याय जप का प्रयोग चलता रहे। शासन की सेवा करते रहें। मंगलभावना।

युवाचार्य महाश्रमण

30—12—2001
ईडवा

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वी श्री कंचनकुमारी जी!

सादर वन्दना व सुखपृच्छा।

इस वर्ष आचार्य प्रवर ने ईडवा पधारकर आपको दर्शन दिए। आपकी प्रसन्नता का पार नहीं रहा। आपकी भावना एवं प्रार्थना के अनुरूप आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित साध्वी संभवश्रीजी को आपके पास

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भेजने की कृपा की है। वह साध्वी चन्द्रप्रभाजी आदि साध्वियों के साथ आपके पास पहुँच रही है। आप उन्हें अच्छी तरह संभाल लें और संस्कारी बनाएँ। उनके निर्माण का दायित्व आप लोगों पर है।

साध्वी श्री सोहनांजी, विनयश्रीजी और पावनप्रभाजी से यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा। सब साध्वियां साधना, स्वास्थ्य और क्षेत्र संभाल के प्रति सजग रहें। ध्रुवयोगों की साधना चलती रहे। केन्द्र के संवाद उधर आने वाली साध्वियों से ज्ञात करें। शेष शुभम्।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी

टापरा

16 मार्च 2002

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारी जी, सोहनांजी, विनयश्रीजी और पावनप्रभाजी पीपड़सिटी में साधनारत हैं। गाँव साताकारी हैं। लोग साधु–साध्वियों के प्रति अच्छी श्रद्धा रखने वाले हैं। आप लोग अपनी साधना और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। गाँव में जितने भी परिवार हैं, उनकी अच्छे ढंग से संभाल करें। नई बहुओं में तेरापंथ के संस्कार भरें। चित्तसमाधि रखें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

5–7–03

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारी जी!

श्वास को देखने का अभ्यास करती रहें। एकाग्रता बढ़ेगी, चित्तसमाधि भी बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ

18–3–2004

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारीजी!

आपका मनोबल ऊँचा है। आपने साहस बढ़ाया और यात्रा के लिए तैयार हो गई। इस बहिर्यात्रा के साथ अन्तरयात्रा की तैयारी करें। आत्मस्थ बनें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

17—3—2005
गिरीगढ़

।। अर्हम् ।।

साध्वीश्री कंचनकुमारीजी!

जीवन के दसवें दशक में आप जो पुरूषार्थ कर रही हैं, वह विरल उदारहण है। खूब

चित्त समाधिस्थ रहें। जप, स्वाध्याय आदि चलता रहे।

युवाचार्य महाश्रमण

2—4—2005
रतनगढ़

।। अर्हम् ।।

साध्वी श्री कंचनकुमारी जी!

जीवन का दसवां दशक चल रहा है। इस उम्र में भी आपकी जागरूकता, उत्साह और कर्मठता उल्लेखनीय है। अब अन्तर्मुखता बढ़ती रहे और चित्तसमाधि बनी रहें। स्वाध्याय, ध्यान व जप का प्रयोग करती रहें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

9—2—2006

।। अर्हम् ।।

साध्वीश्री कंचनकुमारी (राजनगर) साध्वी विनयश्रीजी आदि साध्वियां खूब चित्तसमाधि में रहें। श्रुतयोग का अभ्यास चले।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कंचनकुमारी जी की श्रमशीलता की प्रशंसा औरों के लिए प्रेरणा है। संयम पर्यव निर्मलतर रहें।

युवाचार्य महाश्रमण

।। अर्हम् ।।

साध्वीश्री कंचनकुमारी अभी सुनाम में रह जाए। जब विहार की स्थिति बन जाए तब हमें पता चल जाए। साध्वी सोहनांजी स्वास्थ्य लाभ करें। किसी बात की चिन्ता न करें। खूब चित्त समाधि में रहे।

युवाचार्य महाश्रमण

चण्डीगढ़

।। अर्हम् ।।

साध्वीश्री कंचनकुमारी, सहवर्त्ती सभी साध्वियां!

तुम सबका पारस्परिक सद्भाव और सहनशीलता बढती रहे। धर्मसंघ की प्रभावना करती रहें।

आचार्य महाप्रज्ञ

19.04.2006

अर्हम्

साध्वीश्री कंचनकुमारीजी (राजनगर)!

इस वर्ष आपकी संघनिष्ठा, गुरुभक्ति, उत्साह एवं श्रमशीलता का परमपूज्य आचार्यवर ने कई बार उल्लेख किया। हमारी साध्वियां कोई भी अच्छा काम करती हैं, उससे पूज्यवरों को बहुत प्रसन्नता होती है। आपकी सहयोगिनी साध्वियों का मनोबल ऊंचा है। बुडलाणा क्षेत्र में अच्छा काम हो रहा है। सब साध्वियां स्वस्थ एवं समाधिस्थ रहें। अपनी साधना के साथ धर्म शासन की प्रभावना करती रहें, यही मंगलभावना!

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

16.09.2006

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम	–	कंचन (साध्वी कंचनकुमारी)
जन्म	–	विक्रम संवत् 1971 पौष कृष्णा द्वादशी (12)
स्थान	–	राजनगर – मेवाड़ (राजस्थान)
पिता	–	स्व. श्री मगनलालजी पोरवाल
माता	–	स्व. श्रीमती घूमर देवी पोरवाल
वैराग्य निमित्त	–	ढाई वर्ष की उम्र में मातृ वियोग, संसार पक्षीय चचेरी बहिन साध्वी सोहनांजी (राजनगर) की प्रेरणा से
दीक्षा	–	विक्रम संवत् 1986, माघ शुक्ला दशमी, सुजानगढ (राजस्थान)। अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के करकमलों से
सान्निध्य	–	साध्वी मूलांजी
अग्रगण्य	–	विक्रम संवत् 2002, चुरू, मर्यादा महोत्सव
विहार	–	मारवाड़, थली, मेवाड़, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, शेखावाटी आदि।
संयम जीवन	–	77 वर्ष संयम पर्याय।
स्वर्गवास	–	11 मार्च 2007, शीतला सप्तमी विक्रम संवत् 2062, टोहाना, पंजाब।

–: चातुर्मास विवरण :–

क्र	विक्रम संवत	क्षेत्र	क्र	विक्रम संवत	क्षेत्र
1.	2003	भीलवाड़ा	12.	2014	रिछेड़
2.	2004	केलवा	13.	2015	उदयपुर
3.	2005	ऊमरा	14.	2016	गोगुन्दा
4.	2006	रायपुर	15.	2017	राजनगर (गुरुकुल)
5.	2007	बाड़मेर	16.	2018	जीन्द

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6.	2008	बाव	17.	2019	आसाहोली
7.	2009	जोधपुर	18.	2020	डीडवाना
8.	2010	बणोल	19.	2021	रतननगर
9.	2011	ऊमरा	20.	2022	सार्दुलपुर
10.	2012	सिसाय	21.	2023	सार्दुलपुर
11.	2013	सुनाम	22.	2024	सिसोदा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन परिचय

नाम	–	कंचन (साध्वी कंचनकुमारी)
जन्म	–	विक्रम संवत् 1971, पौष कृष्णा द्वादशी (12)
स्थान	–	राजनगर – मेवाड़ (राजस्थान)
पिता	–	स्व. श्री मगनलालजी पोरवाल
माता	–	स्व. श्रीमती घूमर देवी पोरवाल
वैराग्य निमित्त	–	ढाई वर्ष की उम्र में मातृ वियोग, संसार पक्षीय चचेरी बहिन साध्वी सोहनांजी (राजनगर) की प्रेरणा से
दीक्षा	–	विक्रम संवत् 1986, माघ शुक्ला दशमी, सुजानगढ़ (राजस्थान)। अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के करकमलों से
सान्निध्य	–	साध्वी मूलांजी
अग्रगण्य	–	विक्रम संवत् 2002, चुरू, मर्यादा महोत्सव
विहार	–	मारवाड़, थली, मेवाड़, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, शेखावाटी आदि।
संयम जीवन	–	77 वर्ष संयम पर्याय।
स्वर्गवास	–	11 मार्च 2007, शीतला सप्तमी, विक्रम संवत् 2062, टोहाना, पंजाब।

ISBN 81-7195-258-5

₹ 40.00

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org